सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 150, नई दिल्ली । शनिवार, 10 अगस्त 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

फिर से प्रयास करने से कभी मत घबराना, क्योंकि इस बार शुरुआत शून्य से नहीं अनुभव से होगी।

03 मुद्दत से कैद मनीष सिसौदिया को मिली जमानत

06 विद्यार्थी जीवन में शिक्षा और महत्वाकांक्षा का मूल्य

08 हमारी जैसी श्रद्धा रहेगी वैसा ही हमें फल प्राप्त होगा :- भागवताचार्य विष्णु महाराज

ड्राइवर कंडक्टर को चेकिंग स्टाफ द्वारा किया जा रहा आए दिन प्रताड़ित

संजय बाटला

नई दिल्ली। आज आपने डिपो के एक ड्राइवर और कंडक्टर का सिंधिया हाउस सुपर चेकिंग द्वारा मिंटो रोड पर चालान किया गया ड्राइवर की गलती की बस में एक वाइपर नहीं था और कंडक्टर की फर्स्ट एड एक्सपायर हो रखा था जिसमें दोनों जगह ही ड्राइवर और कंडक्टर का कोई दोष नहीं है लेकिन आए दिन ड्राइवर और कंडक्टर को चेकिंग स्टाफ द्वारा प्रताड़ित किया जाता है जो की ठीक बात नहीं है पहली बात तो डिपो की किसी भी गाड़ी में दोनों वाइपर नहीं है अगर किसी में है तो वह काम नहीं करते इसमें ड्राइवर का क्या दोष ड्राइवर रिपोर्ट लिखवा लिखवा कर थक चुके हैं लेकिन गाड़ियों का काम नहीं होता दूसरी बात कंडक्टर को जो फर्स्ट एड दिए गए हैं वह सब डिपार्टमेंट की तरफ से दिए गए हैं अगर वह एक्सपायर होते हैं तो डिपार्टमेंट वाले उनको नए देने चाहिए इसमें कंडक्टर का कोई दोष नहीं लेकिन आखिर में पिसना तो ड्राइवर और कंडक्टर को ही है इस बारे में मैं ड्राइवर और कंडक्टर भाइयों की राय जानना चाहूंगा।

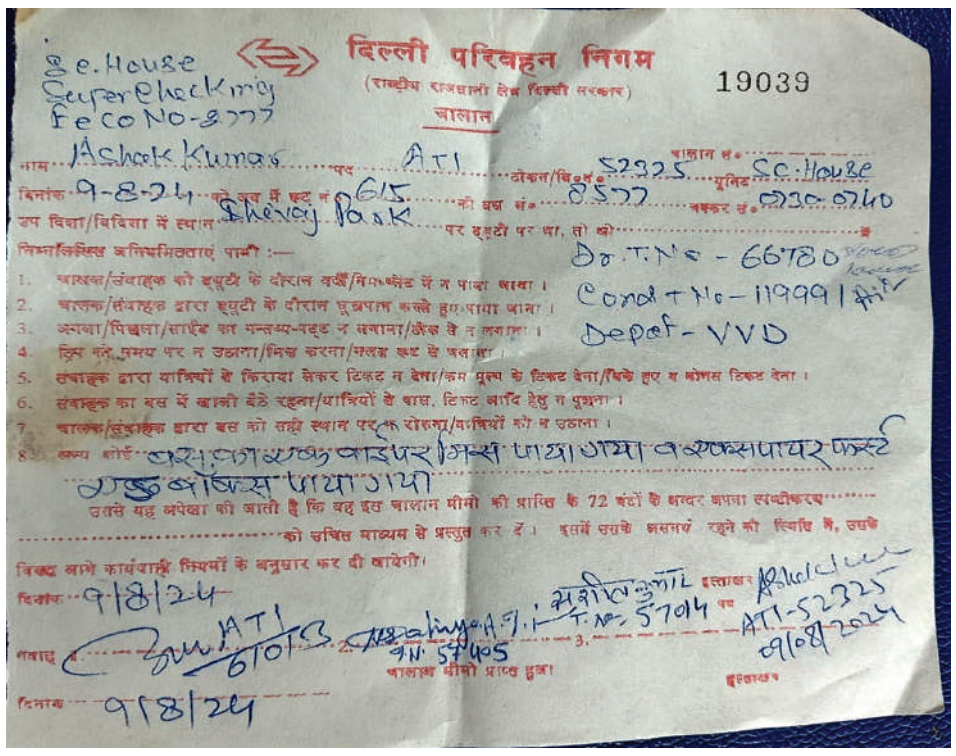

'आईएसबीटी' हो सकता नरेला अथवा सिंघु क्षेत्र में शिफ्ट

कश्मीरी गेट स्थित अंतरराज्यीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) को मध्य दिल्ली से दिल्ली-हरियाणा के बॉर्डर पर नरेला अथवा सिंघु क्षेत्र में शिफ्ट किया जा सकता है। बृहस्पतिवार को दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने ट्रैफिक व्यवस्था की समीक्षा करते हुए परिवहन आयुक्त को इसे स्थानांतरित करने के लिए योजना तैयार करने का आदेश दिया है। इस टर्मिनल में रोज हजारों की संख्या में वाहन आते हैं। यह दिल्ली का सबसे व्यस्त जगहों में से एक है। यहां रोजाना 50 हजार से अधिक लोग सफर करने के लिए आते हैं।

दिल्ली मेट्रो में यात्रा करने वालों को अब मिलेगी खास सुविधा, बचेंगे अच्छे-खासे पैसे; डीएमआरसी ने शुरू किया ट्रायल

परिवहन विशेष न्यूज

डीएमआरसी ने स्मार्ट कार्ड जैसे क्यूआर कार्ड टिकट का मेट्रो में ट्रायल शुरू किया। इसका इस्तेमाल एक से अधिक यात्रा के दौरान किराया भुगतान करने के लिए किया जा सकता है। इससे बार-बार क्यूआर कोड टिकट नहीं लेना पड़ेगा। ऐसे में उम्मीद जताई जा रही है कि अगले माह सितंबर के शुरुआत तक में इसका उपयोग शुरू हो जाएगा।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) स्मार्ट कार्ड जैसे क्यूआर कार्ड टिकट का मेट्रो में ट्रायल शुरू कर दिया है। इस क्यूआर कोड टिकट का इस्तेमाल यात्री से एक से अधिक यात्रा के दौरान किराया भुगतान के लिए कर सकते हैं। क्योंकि इस क्यूआर कोड टिकट को स्मार्ट कार्ड की तरह रिचार्ज कराया जा सकता है।

सितंबर के शुरुआत में स्टोर वैल्यू क्यूआर कोड टिकट का इस्तेमाल

डीएमआरसी (DMRC News) का कहना है कि इस माह के अंत तक या अगले माह सितंबर के शुरुआत में स्टोर वैल्यू क्यूआर कोड टिकट का इस्तेमाल शुरू हो जाएगा। डीएमआरसी के मोमेंटम 2.0 मोबाइल ऐप पर यह उपलब्ध होगा। इसलिए यात्री आसानी से इसका इस्तेमाल कर सकेंगे।

मौजूदा समय में कागज वाले क्यूआर कोड आधारित टिकट का इस्तेमाल हो रहा है। इसके अलावा डिजिटल क्यूआर कोड टिकट की सुविधा भी उपलब्ध है। इसका एक बार ही मेट्रो का किराया भुगतान के लिए इस्तेमाल हो पाता है।

यात्रियों को बार-बार क्यूआर कोड टिकट लेने की नहीं पड़ेगी जरूरत

इस वजह से हर यात्रा के लिए यात्रियों को अलग क्यूआर कोड टिकट लेना पड़ता है। स्टोर वैल्यू क्यूआर कोड टिकट मेट्रो के ऐप के जरिये डिजिटल कार्ड वॉलेट को रिचार्ज कर कई बार इस्तेमाल किया जा सकेगा। इससे यात्रियों को बार-बार क्यूआर कोड टिकट लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

वाहन में पेट्रोल भराने से पहले ध्यान दें! जांच लें वाहन के सभी पेपर नहीं तो कट जाएगा चालान, 15 अगस्त तक का है मौका

अगर आपके पास दुपहिया या चार पहिया वाहन है तो यह खबर आपके लिए ही है। अब दिल्ली में बिना वैध पीयूसी वाले वाहनों का ई-चालान कटेगा। इसके लिए दिल्ली सरकार की ओर से आदेश दे दिए गए हैं। शुरू में 100 पेट्रोल पंपों पर पीयूसी जांच की सुविधा शुरू होगी। कैमरे वाहन के नंबर प्लेट को स्कैन करके पता लगाएंगे कि वाहन के पास वैध पीयूसी है या नहीं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अगले हफ्ते से वैध पीयूसी (प्रदूषण नियंत्रण) प्रमाणपत्र के बिना वाहन चलाने वालों की खैर नहीं है। दिल्ली सरकार ने वाहनों से होने वाले प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए 100 पेट्रोल पंपों पर पीयूसी जांच के लिए कैमरे लगाने व सॉफ्टवेयर इंस्टाल करने के लिए निजी कंपनी नवगति टेक को टेंडर आवंटित कर दिया है। कंपनी को 15 दिन के अंदर अपनी सिस्टम शुरू कर देना है।

कंपनी को दिया गया पांच साल के लिए ठेका

कंपनी को पांच साल के लिए ठेका दिया गया है। दिल्ली ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (डीटीआईडीसी) के इसी टेंडर को विस्तार देकर बाकी के 400 पेट्रोल पंपों पर भी सॉफ्टवेयर इंस्टॉल किए जाएंगे। बता दें कि इसी कंपनी ने चुनिंदा पेट्रोल पंपों पर पायलट प्रोजेक्ट भी किया था।

परिवहन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि नवगति टेक को 15 दिनों के अंदर कम से कम 25 पेट्रोल पंपों पर पीयूसी जांच के लिए सिस्टम तैयार कर देने को कहा गया है। उन्होंने दावा किया कि कुछ ही दिनों में 100 पेट्रोल पंपों पर पीयूसीसी जांच का सिस्टम लग जाएगा।

पीयूसी नहीं बनवाने पर कटेगा ई-चालान

जिसकी अनुमानित लागत छह करोड़ रुपये है। पेट्रोल पंपों पर आने वाले वाहनों में वैध पीयूसीसी नहीं होने पर प्रदूषण जांच के लिए कुछ घंटों की मोहलत भी दी जाएगी और इस अवधि में पीयूसी नहीं बनवाने पर स्वतः ई-चालान कट जाएगा और इसकी सूचना मोबाइल पर भेज दी जाएगी।

दिल्ली के लगभग सभी पेट्रोल पंपों पर पहले से कैमरे लगे हुए हैं और निजी कंपनी को पेट्रोल पंपों पर साफ्टवेयर इंस्टाल करना है तथा परिवहन सेवा पोर्टल पर जोड़ना भर है। इससे पहले पायलट प्रोजेक्ट के रूप 25 पेट्रोल पंपों पर पीयूसीसी वैधता सत्यापन प्रणाली स्थापित की गई थी और इस दौरान करीब 24 प्रतिशत वाहन यहां पर वैध पीयूसीसी के बिना पाए गए थे। बता दें कि दिल्ली में 79 लाख से अधिक वाहन पंजीकृत हैं।

भारतीय सेना और जिम्मेदार लॉजिस्टिशियन बनने का महत्व

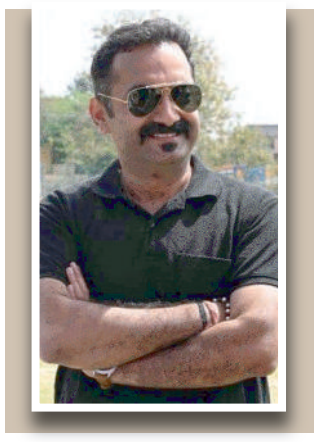

- डॉ. लॉजिस्टिक्स

भारतीय सेना हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का मुख्य आधार है, और इसके सफल संचालन के लिए लॉजिस्टिक्स की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लॉजिस्टिक्स का कार्य केवल सामग्री और आपूर्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक विस्तृत प्रक्रिया है, जिसमें संसाधनों की योजना, समन्वय, और सही समय पर प्रभावी वितरण शामिल होता है।

सेना के लिए लॉजिस्टिक्स का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि युद्ध के दौरान, सैनिकों को समय पर और पर्याप्त मात्रा में हथियार, गोला-बारूद, खाद्य सामग्री, और मेडिकल सप्लाई की जरूरत होती है। लॉजिस्टिक्स की यह जिम्मेदारी होती है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो, जिससे सैनिक अपने कर्तव्यों का निर्वहन बिना किसी चिंता के कर सकें। इस कारण से लॉजिस्टिक्स को सेना की रीढ़ माना जाता है।

एक जिम्मेदार लॉजिस्टिशियन बनने के लिए कुछ आवश्यक गुणों का होना जरूरी है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है योजनाबद्धता। प्रत्येक गतिविधि की सटीक योजना बनाना आवश्यक है ताकि किसी भी आपातकालीन स्थिति में सामग्री की कमी न हो। इसके साथ ही, समय प्रबंधन का भी विशेष ध्यान रखना होता है, क्योंकि युद्धकाल में समय पर आपूर्ति का होना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

लॉजिस्टिशियन को बदलती परिस्थितियों के अनुसार नवाचार और अनुकूलन की क्षमता भी होनी चाहिए। यह गुण उसे विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, सेना के विभिन्न विभागों और अन्य सहयोगी एजेंसियों के साथ सहयोग और समन्वय भी जरूरी होता है।

सबसे महत्वपूर्ण है ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा, जो एक सच्चे लॉजिस्टिशियन की पहचान है। जिम्मेदारी के साथ अपने कार्य को निभाना और देशहित को सर्वोपरि रखना हर लॉजिस्टिशियन का कर्तव्य है।

इस प्रकार, लॉजिस्टिक्स भारतीय सेना के संचालन का एक अनिवार्य हिस्सा है। एक जिम्मेदार लॉजिस्टिशियन न केवल सेना के कार्यों को सुचारू रूप से चलाता है, बल्कि वह राष्ट्र की सुरक्षा को भी सुनिश्चित करता है। इसलिए, लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करने और देश की सेवा के लिए तत्पर रहने की आवश्यकता है।

डॉ. लॉजिस्टिक्स एक पहल है जो पाठकों को लॉजिस्टिक्स उद्योग की गहरी समझ प्रदान करने का प्रयास करती है। इसका उद्देश्य है उद्योग के विभिन्न पहलुओं, कार्यों और जिम्मेदारियों पर प्रकाश डालना, ताकि लोग इस क्षेत्र में बेहतर संभावनाओं और अवसरों को समझ सकें। यह पाठकों को लॉजिस्टिक्स के महत्व और इसकी जटिलताओं से अवगत कराकर उद्योग में उनकी समझ और दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है।

डॉ. अंकुर शरण (डॉ. लॉजिस्टिक्स)
drlogistics.ankur@gmail.com

नाग पंचमी पर नाग देवता की पूजा-अर्चना से बनी रहती है जीवन में सुख-समृद्धि

प्रतीक स्वरूप गोबर से दीवार पर नाग का जोड़ा बनाया जाता है और उन्हें सिंदूर, अक्षत लगाया जाता है, पुष्प अर्पित किये जाते हैं तथा फल और नैवेद्य का प्रसाद चढ़ाया जाता है उसके बाद दीप जलाकर उनकी पूजा की जाती है और प्रार्थना की जाती है कि हे नाग देवता कृपया हमारे परिवार की रक्षा करें और कष्टों से मुक्ति दिलाएं।

श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को नाग पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। इस साल 9 अगस्त 2024 को नाग पंचमी का पर्व मनाया जायेगा। इस दिन नागों का पूजन किये जाने की परम्परा है। इस दिन व्रत करके सांपों को दूध पिलाया जाता है। गरूड़ पुराण में सुझाव दिया गया है कि नाग पंचमी के दिन घर के दोनों बगल में नाग की मूर्ति बनाकर पूजन किया जाए। पंचमी तिथि के स्वामी नाग हैं। अर्थात्शेषनाग आदि सर्पराजाओं का पूजन पंचमी को होना चाहिए। हिन्दू धर्म में नागों को देवताओं के तुल्य माना गया है। भगवान विष्णु शेष शैय्या पर विराजमान हैं तो शिवजी के तो आभूषण ही नाग हैं।

नाग पंचमी पूजन विधि

प्रतीक स्वरूप गोबर से दीवार पर नाग का जोड़ा बनाया जाता है और उन्हें सिंदूर, अक्षत लगाया जाता है, पुष्प अर्पित किये जाते हैं तथा फल और नैवेद्य का प्रसाद चढ़ाया जाता है उसके बाद दीप जलाकर उनकी पूजा की जाती है और प्रार्थना की जाती है कि हे नाग देवता कृपया हमारे परिवार की रक्षा करें और कष्टों से मुक्ति दिलाएं। नागपंचमी के दिन एक रस्सी में सात गांठें लगाकर और उस रस्सी को सांप मानकर लकड़ी के एक पट्टे पर रखा जाता है। हल्दी-रोली, चावल और फूल आदि चढ़ाकर नाग देवता की पूजा करने के बाद कच्चा दूध, घी और चीनी मिलाकर इस रस्सी को सर्प देवता को अर्पित किया जाना चाहिए। इस दौरान पूजन के समय सर्प देवता की स्तुति इस श्लोक से करनी चाहिए-'अनन्तम्, वासुकि, शेषम्, पद्मनाभम्, चकम्बलम्-कर्कोतकम्-तक्षकम्। पूजन के बाद नाग देवता की आरती जरूर उतारें। बड़े शहरों में इस पर्व के बारे में लोग भले ही ज्यादा नहीं जानते हों लेकिन छोटे शहरों और गांवों में आज भी लोग नाग पंचमी के दिन श्रद्धापूर्वक पूजन करते हैं और कथा सुनते हैं।

नाग पंचमी पर्व से जुड़ी कुछ प्रचलित कथाएं इस प्रकार हैं-

- किसी राज्य में एक किसान रहता था। किसान के दो पुत्र व एक पुत्री थी। एक दिन हल चलाते समय सांप के तीन बच्चे कुचलकर मर गये। नागिन पहले तो विलाप करती रही फिर संतान के हत्यारे से बदला लेने के लिए चल दी। रात्रि में नागिन ने किसान, उसकी पत्नी व दोनों लड़कों को डस लिया। अगले दिन नागिन किसान की पुत्री को डसने के लिए पहुंची तो किसान की पुत्री ने नागिन के सामने दूध से भरा कटोरा रखा और हाथ जोड़कर क्षमा मांगने लगी। नागिन ने प्रसन्न होकर उसके माता-पिता व दोनों भाइयों को जीवित कर दिया। उस दिन श्रावण शुक्ला पंचमी थी। तब से नागों के प्रकोप से बचने के लिए इस दिन नागों की पूजा की जाती है।

- एक ब्राह्मण की सात पुत्रवधुएं थीं। सावन मास आते ही छह बहुएं तो भाई के साथ मायके चली गईं लेकिन सातवीं बहू का कोई भाई नहीं था सो वह अपने ससुराल में ही रही। वह भाई के न होने से काफी दुखी थी। उसने एक दिन पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग को भाई के रूप में याद किया। शेषनाग ने जब वह करुणामयी आवाज सुनी तो वह द्रवित हो गये और एक बूढ़े ब्राह्मण का रूप धर कर आए और उसे लेकर चल दिये। जब उन्होंने कुछ रास्ता तय कर लिया तो वह अपने असली रूप में आ गये और अपनी मुंहबोली बहन को अपने फन पर बिठाकर अपने लोक को चले गये।

उनकी मुंहबोली बहन नागलोक में आनंद के साथ समय व्यतीत करने लगी। शेषनाग के कुल में बहुत से नाग बच्चों ने जन्म लिया। उन नाग बच्चों को सब जगह विचरण करते देख शेष-नागरानी ने अपने पति की मुंहबोली बहन को एक दीपक प्रदान किया और बताया कि यह चमत्कारी दीपक है इसकी रोशनी में घोर अंधेरे में भी सब कुछ देखा जा सकता है। बहन ने दीपक रख लिया लेकिन एक दिन असावधानीवश उसके हाथ से वह दीपक नीचे गिर गया जोकि वहां विचर रहे कुछ नाग बच्चों पर

गिर गया और उनकी पूंछ थोड़ी सी कट गई। इस घटना के बाद बहन अपने ससुराल लौट आई।

जब अगला सावन आया और बाकी छह बहुएं अपने-अपने मायके से आए बुलावे के चलते वहां चली गईं और सातवीं बहू फिर से अपने मुंहबोले भाई की राह ताकने लगी। उसने दीवार पर नाग देवता की तस्वीर उकेरी और उनकी पूजा करने लगी। दूसरी ओर जिन नाग बालकों की पूंछ कटी थी वह उससे बदला लेने के लिए आ रहे थे। लेकिन जब वह उसके घर पहुंचे और उसे अपनी पूजा करते हुए पाया तो उनका सारा क्रोध शांत हो गया। उन्होंने अपने पिता की मुंहबोली बहन के हाथों से प्रसाद ग्रहण किया और उसे आशीर्वाद दिया कि उसे नागकुल से अब कोई डर नहीं रहेगा। नाग बालकों ने अपनी बुआ को मणियों की एक माला भी दी और कहा कि आज सावन की पंचमी के दिन जो भी महिला हमें भाई के रूप में पूजेगी हम उनकी रक्षा करेंगे।

घर में रखना चाहते हैं लकड़ी का मंदिर तो जरूर जान लें वास्तु से जुड़े ये नियम

आपने देखा होगा कि कई घरों में लकड़ी का मंदिर होता है। समय के बदलने के साथ ही घर में लकड़ी का मंदिर रखने का चलन काफी बढ़ गया है। लेकिन घर में लकड़ी का मंदिर रखने से पहले इससे जुड़े नियम जरूर जान लें।

आपने देखा होगा कि कई घरों में लकड़ी का मंदिर होता है। समय के बदलने के साथ ही घर में लकड़ी का मंदिर रखने का चलन काफी बढ़ गया है। इसकी एक वजह यह भी है कि घरों में स्पेस कम होता है। जिसके कारण लोग घरों में लकड़ी का मंदिर रखना पसंद करते हैं।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि वास्तु शास्त्र में घर में लकड़ी का मंदिर रखने के जुड़े कई नियमों के बारे में बताया गया है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको घर में लकड़ी का मंदिर लगाने से जुड़े नियमों के बारे में बताने जा रहे हैं।

किस पेड़ की लकड़ियां

अगर आप भी घर पर लकड़ी का मंदिर रखना चाहते हैं, तो आपको इस बात की जानकारी जरूर होनी चाहिए कि लकड़ी का मंदिर किस लकड़ी से बना है। वास्तु शास्त्र के मुताबिक मंदिर के लिए कुछ लकड़ियां शुभ मानी जाती हैं। यदि इन लकड़ियों से घर का मंदिर बनाया जाता है, तो मंदिर शुभ माना जाता है।

पूर्व-पश्चिम दिशा है शुभ

अगर संभव हो तो घर में लकड़ी का मंदिर पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए। आप जब भी मंदिर में पूजा करें, तो आपका मुंह पूर्व दिशा की तरफ होना चाहिए। वहीं पीठ पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए। वहीं वास्तु शास्त्र के मुताबिक पूर्व दिशा के अलावा आप उत्तर दिशा की तरफ भी मंदिर रख सकते हैं।

मंदिर में बिछाएं लाल-पीला वस्त्र

अगर आप भी घर में लकड़ी का मंदिर रखना चाहते हैं, तो लकड़ी के मंदिर में लाल या पीला कपड़ा जरूर बिछाएं। इसको शुभ माना जाता है। वहीं भगवान की मूर्ति कपड़ा बिछाकर ही रखना चाहिए।

धूल-मिट्टी और दीमक से बचाएं

वैसे तो मंदिर को साफ ही रखना चाहिए। लेकिन लकड़ी का मंदिर रखने के दौरान ध्यान रखें कि इसमें कहीं धूल-मिट्टी या दीमक न लगे। क्योंकि यह निगेटिव ऊर्जा का कारण बन सकता है। क्योंकि लकड़ी का मंदिर जब पुराना हो जाता है, तो इसमें दीमक लगने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए समय-समय पर मंदिर की साफ-सफाई करते रहना चाहिए।

दीवार पर न टांगे लकड़ी का मंदिर

कई लोग घर में ज्यादा स्पेस न होने पर लकड़ी के मंदिर को दीवार पर लटका देते हैं। लेकिन वास्तु शास्त्र की मानें, तो घर की दीवार पर मंदिर टांगने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार नहीं होता है। इसलिए प्रयास करें कि मंदिर को दीवार पर न टांग कर घर में किसी सुरक्षित स्थान पर रखें। यदि घर में अधिक स्पेस नहीं है, तो आप छोटा मंदिर भी रख सकते हैं।

बरसात के मौसम में सूप पीने से सेहत को मिलते हैं जबरदस्त फायदे, इम्यूनिटी होगी मजबूत

मानसून के मौसम में कुछ चीजों खाने से मनाही होती हैं क्योंकि बीमारियां होने का खतरा रहता है। लेकिन इस मौसम में सूप पीने से कई फायदे मिलते हैं। आइए जानते हैं सूप पीने से शरीर को क्या फायदे मिलते हैं।

मानसून के सीजन में गर्मी से राहत तो मिलती है, लेकिन बीमारियों का खतरा भी काफी बढ़ जाता है। मानसून में हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन करना और कई चीजें खाने से बीमारियों के सक्रंमण फैलने का खतरा रहता है। लेकिन इस मौसम में सूप पीने से कई फायदे मिलते हैं। बरसात के मौसम में सूप पीने से जबरदस्त फायदे मिलते हैं। आइए जानते हैं सूप पीने से शरीर को क्या फायदे मिलते हैं।

पानी की कमी दूर करे

बरसात के मौसम वातावरण थोड़ी ठंडक होती है। जिस वजह से पानी पीना कम हो जाता है। जिस वजह से डिहाइड्रेशन का खतरा भी बढ़ जाता है। शरीर में होने वाली पानी की कमी को दूर करने के लिए आप सूप पी सकते हैं। मानसून में सूप पीने से बॉडी हाइड्रेट रखता है।

वजन कंट्रोल करता है

सूप में अत्यंत फाइबर पाई जाती है, जो आपके वजन को कंट्रोल करने में मदद करता है। 1 कटोरी सूप पीने से 5 से 10 ग्राम फाइबर मिलता है। यह वजन को कम करने में मदद करता है। इसे आप अपनी डाइट में जरुर शामिल कर सकते हैं।

इम्यूनिटी बढ़ाए

बरसात के मौसम अक्सर इम्यूनिटी कमजोर हो जाती है। शरीर के रोगो से लड़ने की क्षमता बढ़ाने के लिए वेजिटेबल सूप पी सकते हैं। इसमें जिंक, फॉसफोरस, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम और सिलेनियम के गुण होते हैं।

हेल्दी स्किन के लिए

मानसून के मौसम में स्किन थोड़ी बेजान और ड्राई हो जाती है। इस मौसम में स्किन को रोगों को दूर रखने के लिए आप बारिश के मौसम सूप पी सकते हैं। सूप में फाइबर सभी टॉक्सिंस को बाहर कर देता है। जिससे स्किन को हेल्दी रहती है।

सफेद बालों को इन हेयर कलर से दें सैलून जैसा इफेक्ट, मिनटों में मिलेगा मनचाहा शेड्स

बहुत सारे लोग सफेद बाल होने पर हेयर कलर का उपयोग करते हैं। लेकिन हेयर कलर का इस्तेमाल सावधानी के साथ करना चाहए। क्योंकि आजकल मार्केट में कई ब्रैंड के हेयर कलर मिल जाते हैं। ऐसे में यदि हेयर कलर का चुनाव करते समय सावधानी न बरती जाए, तो आपको इचिंग, स्किन एलर्जी और रेडनेस जैसी समस्याएं हो सकती हैं। वहीं लंबे समय तक इन प्रोडक्ट का इस्तेमाल करने से बालों के डैमेज होने का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे लॉन्ग लास्टिंग हेयर कलर के बारे में बताने जा रहे हैं, जो जल्दी नहीं छूटते हैं और साथ ही यह आपके बालों का टेक्सचर भी नहीं खराब करते हैं।

लॉरियल पेरिस सेमी पर्मानेंट हेयर कलर

ये सेमी पर्मानेंट हेयर कलर होता है, जोकि अमोनिया फ्री फॉर्मूले पर तैयार किया जाता है। इसमें शहद मिलाया कंडिशनर भी शामिल होता है। यह आपके बालों को ग्लॉसी फिनिश देने का काम करता है। वहीं आपको इसमें कई शेड्स मिल जाएंगे। सिर्फ 20 मिनट में यह हेयर कलर आपको घर पर ही सैलून जैसा फिनिश देता है। लॉरियल पेरिस सेमी पर्मानेंट हेयर कलर के एक पैक में आप कम से कम 28 बार अपने बालों को कलर कर सकती हैं।

Vegetal Bio हेयर कलर सॉफ्ट ब्लैक

Vegetal Bio सेमी पर्मानेंट कलर अमोनिया और पीपीडी फ्री होता है। इसमें रेसोर्सिनॉल, पैराबेन और एल्यूमिनियम भी नहीं रहता है। इसलिए इसको अप्लाई करने से आपको एलर्जी नहीं होती है। बता दें कि यह सौ फीसदी हर्बल सर्टिफायड ऑर्गेनिक हेयर कलर है, जिसको महिलाएं और पुरुष दोनों इस्तेमाल कर सकते हैं। वहीं इसमें मौजूद हर्बल इंग्रीडिएंट्स बालों को यूवी रेज के इफेक्ट से बचाने का काम करते हैं। जिससे बालों का नेचुरल टेक्सचर मौजूद रहता है।

Bigen स्पीडी हेयर कलर

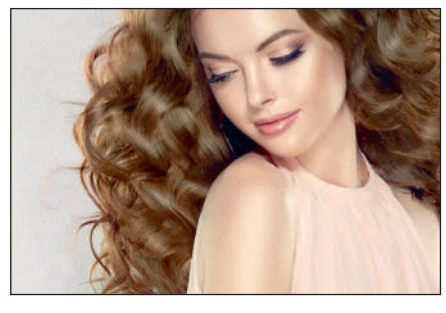

इस हेयर कलर में क्रीम फॉर्म में कलर के साथ 40 ग्राम के दो कंडिशनर मिलते हैं। इस हेयर कलर को सिर्फ 5 मिनट अप्लाई करने से आपके बालों को मनचाहा कलर मिलता है। वहीं यह हेयर कलर लॉन्ग लास्टिक होने के साथ इसमें भीनी-भीनी खुशबू बनी रहती है। शायद ही आपको इससे तेज कलरिंग इफेक्ट अन्य किसी प्रोडक्ट से मिले। इस हेयर कलर को भी महिला या पुरुष कोई भी इस्तेमाल कर सकता है।

Naturtint पर्मानेंट हेयर कलर

यह एक परमानेंट हेयर कलर होता है, जोकि अमोनिया फ्री है। इसमें 92 फीसदी नेचुलर इंग्रीडिएंट्स मिले होते हैं और यह USDA सर्टिफायड होता है। इसमें आपको 18 शेड्स मिलते है और यह पैराबेन और सल्फेट फ्री होता है। यह हेयर कलर आपके बालों को नरिशमेंट देने के साथ बालों का मॉइश्चर भी बनाए रखता है। इसमें प्लांट इंग्रीडिएंट्स जैसे- मीडोफोम सीड ऑयल और ऑलिव ऑलेइक एसिड जैसी चीजें होती हैं। जो आपके बालों को नुचरल बनाए रखने में मदद करती हैं।

Paradyes नेचुरल ब्लैक

यह हेयर कलर आपको पर्मानेंट कलर नेचुरल लुकिंग रिजल्ट देता है। बता दें कि यह अमोनिया, पीपीडी और रिसॉर्सिनॉल फ्री होता है, जो लॉन्ग लास्टिंग इफेक्ट के लिए जाना जाता है। इस हेयर कलर के एक पैक में पर्मानेंट क्रीम कलर के साथ कलर केयर शैंपू, कलर केयर कंडिशनर, डेवलपर, एक ब्रश और डिस्पोजेबल ग्लोव्स भी मिलता है।

आलस और नींद की वजह से नहीं कर पाते हैं कोई काम, तो जानिए क्या है इसके पीछे का कारण

अगर आपको भी लगता है कि आलस में आपका भी पूरा दिन बीत जाता है और काम करने में समस्या होते है। तो यह इस ओर संकेत करता है कि कुछ गड़बड़ है। हालांकि ऐसा कई कारणों से हो सकता है।

अक्सर खाना खाने के बाद आलस और नींद आने लगती है, लेकिन क्या आपने बिना खाना खाए भी ऐसा महसूस किया है। तो बता दें कि इसमें घबराने की कोई बात नहीं है, क्योंकि बहुत सारे लोगों के साथ ऐसा होता है। हालांकि कभी-कभी हमें इतनी अधिक थकान होती है कि आंखें भारी होने लगती हैं। ऐसे में दिन भर के काम भी नहीं हो पाते हैं और पूरा दिन प्रोकास्टिनेशन में निकाल देते हैं। थोड़ी देर में काम करेंगे, इस विचार से सारे काम छूटते जाते हैं।

अगर आपको भी लगता है कि आलस में आपका भी पूरा दिन बीत जाता है और काम करने में समस्या होते है। तो यह इस ओर संकेत करता है कि कुछ गड़बड़ है। हालांकि ऐसा कई कारणों से हो सकता है। ऐसे में आप कुछ आदतों को अपनाकर इस समस्या को दूर कर सकते हैं। तो आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको उन आदतों के बारे में बताने जा रहे हैं जो आलस और नींद को भगाने में सहायता कर सकती हैं।

अपना टास्क लिखें

बहुत सारे लोग रात को सोने के समय जर्नल लिखते हैं और सुबह उठकर अपने टास्क लिखते हैं। इससे आपको दिन के अंत में यह देखना आसान होता है कि आपने अपने कितने टास्क पूरे किए हैं और कितना काम बचा है। आपको जो भी काम करना है उसकी लिस्ट बनाकर तैयार करें और बड़े टास्क को छोटे और मैनेजबल काम में डिवाइड करें। जैसे-जैसे आपके टास्क पूरे होते जाएं तो उनके आगे निशान लगाते हैं। इससे न सिर्फ आपको उपलब्धि का एहसास होगा, बल्कि काम में फोकस भी कर पाएंगे।

सोशल मीडिया डिस्ट्रैक्शन

अधिकतर लोगों का आधा समय सोशल मीडिया के इस्तेमाल में चला जाता है। इंस्टाग्राम व फेसबुक खुलते ही कब एक घंटा बीत जाता है, पता ही नहीं चलता है। यही वजह है कि आप समय पर काम पूरा नहीं कर पाते हैं। ऐसे में डिस्ट्रैक्शन को दूर करने के लिए आप इन एप्लिकेशन को फोर्स पॉज कर सकते हैं। या फिर आप इन एप्लीकेशन के नोटिफिकेशन बेल को साइलेंट भी कर सकते हैं। इससे आप आराम से बिना किसी डिस्ट्रैक्शन के काम कर सकते हैं।

पर्याप्त मात्रा में पिएं पानी

बता दें कि आलस, थकान और नींद की एक वजह एनर्जी की कमी भी हो सकती है। शरीर में एनर्जी तब कम होती है, जब आप डिहाइड्रेशन से गुजर रहे होते हैं। इसलिए प्रयास करें कि आप पूरा दिन पानी पीते रहें। इससे आपका शरीर हाइड्रेटेड रहेगा और एनर्जी से भरपूर रहेंगे। ऑफिस में भी आप एक छोटी बोतल अपनी डेस्क पर जरूर रखें। क्योंकि अगर आप कम पानी पीते हैं, तो हर घंटे पानी पीने का टाइमर लगाएं। इससे आपको समय-समय पर पानी पीने का नोटिफिकेशन मिलता रहेगा और आप हाइड्रेटेड रहेंगे। जब आप हाइड्रेडेट रहेंगे तो आपका दिमाग सतर्क रहेगा और एनर्जी का लेवल बढ़ेगा।

वॉर्मअप की डालें आदतें

अपने दिन की शुरूआत सुबह वॉर्म अप से करनी चाहिए। आपको इंटेंस एक्सरसाइज करने से दिन की शुरूआत करनी चाहिए। शुरूआत में आप हल्की वॉर्मअप एक्सरसाइज करें और फिर इस रूटीन को फॉलो करें। इससे आपका दिमाग खुलेगा और शरीर में फुर्ती आएगी। आप हल्के व्यायाम, माइंडफुलनेस मेडिटेशन या फिर स्ट्रेचिंग आदि कर सकते हैं। यह आपके लिए सकारात्मक माहौल बनाने में मदद करता है और प्रोडक्टिविटी को बढ़ावा दे सकता है।

तय करें मैनेजेबल गोल्स

आप अपने लिए ऐसे गोल्स सेट करें, जिनको

करने से आपको थकान महसूस न हो। आप एक दिन में 6-7 प्रोजेक्ट्स पूरे कर लेंगे और आपको बर्नआउट फील होगा। अनरियलिस्टिक गोल्स अधिक समय लेते हैं और यह स्ट्रेस और एंग्जायटी का कारण बन सकते हैं। ऐसे में आप अपने दिन को प्रोडक्टिव बनाने के लिए छोटे-छोटे गोल्स सेट करें। जैसे एक दिन की छुट्टी में आप घर की साफ-सफाई करेंगे तो अगले दिन आप अधिक थका हुआ महसूस करेंगे। इसलिए आप एक छुट्टी में लिविंग एरिया और किचन की सफाई करें और दूसरे दिन कमरे और बाथरूम की सफाई कर लें।

मुद्दत से कैद मनीष सिसौदिया को मिली जमानत...

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। भ्रष्टाचार और मनी लांड्रिंग मामले में पिछले 17 महीने से दिल्ली की तिहाड जेल में कैद पूर्व डिप्टी सीएम को सुप्रीमकोर्ट ने आखिर जमानत दे दी है। उन्हें 10 लाख रूपये के निजी मुचलके और इतनी ही राशि के दो जमानती बांड पर रिहा करने का निर्देश दिया।

बता दें कि मनीष सिसौदिया दिल्ली की कथित आबकारी नीति घोटाले से जुडे मामले में जेल में बंद है। दरअसल सिसौसिदिया के बाहर आने का रास्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने बनाया। सुप्रीमकोर्ट के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने निचली अदालत और हाईकोर्ट भेजे जाने को लेकर सवाल उठाया था। सुप्रीमकोर्ट में शुक्रवार को जस्टिस बीआर गवई और के विश्वनाथन की बेंच ने कहा कि मनीष सिसौदिया 17 ,महीने से हिरासत में है और अभी तक मुकदमा शुरू नहीं हुआ है ।इससे उनके जल्द सुनवाई के अधिकार का हनन हो रहा है। बेंच ने कहा कि इन मामलो में जमानत के.लिए उन्हें निचली अदालत भेजना न्याय का गला घोंटना होगा ।शीर्ष अदालत ने कहा कि अब समय आ गया है कि निचली अदालतें और हाईकोर्ट ये समझे कि जमानत एक नियम है ।और जेल एक अपवाद। सुप्रीमकोर्ट ने सिसौदिया को 10 लाख रूपये के निजी मुचलके और इतनी ही राशि के दो जमानती बांड पर रिहा करने का निर्देश दिया। दरअसल वकील सिंघवी ने सिसौदिया की जमानत के पक्ष में अक्टूबर ,2023 के उस आदेश का हवाला दिया था,जिसमें सुप्रीमकोर्ट ने उन्हें जमानत देने से इंकार कर दिया था। सुप्रीमकोर्ट ने कहा था कि अगर 6-8 महीने में सुनवाई पूरी नहीं होती है तो वह नई जमानत याचिका दायर कर सकते है ।इसके बाद इस साल 4 जून को सुप्रीमकोर्ट ने कहा कि अंतिम शिकायत/चार्जशीट दायर होने के बाद वह अपनी जमानत याचिका को फिर से जीवित करने के लिए स्वतंत्र होगें।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री सिसौदिया को सीबीआई ने 26 फरवरी 2023 को दिल्ली की अब रद्द हो चुकी आबकारी नीति 2021 -22 के निर्माण और कार्यान्वयन कथित अनियमितताओ के लिए गिरफ्तार किया था। ईडी ने उन्हे 9 मार्च, 2023 को सीबीआई की प्राथमिकी से उपजी मनीष लांड्रिंग मामले में गिरफ्तार किया था ।उन्होने 28 फरवरी ,2023, को दिल्ली मन्त्रीमंडल से इस्तीफा दे दिया था। मनीष सिसौदिया ने जमानत की मांग करते हुए कहा कि वह 17 महीने से हिरासत में है ।और उनके खिलाफ मुकदमा शुरू नहीं हुआ है ।ईडी और सीबीआई ने उनकी याचिका का विरोध किया था।

पार्यावरण पाठशाला : वृक्ष का निवेदन - एक अपील

प्रिय मित्रों,

मैं एक वृक्ष हूँ, जो इस धरती पर जीवन का प्रतीक हूँ। मैं आपको छाया, फल, और स्वच्छ हवा देता हूँ। मेरी जड़ें इस धरती को मजबूती से पकड़ती हैं, ताकि बाढ़ और मिट्टी का कटाव न हो। मेरे पत्ते हवा को साफ करते हैं, ताकि आप स्वस्थ सांस ले सकें। परंतु आज मैं आपसे एक विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ।

कृपया मेरी छाल पर न कील ठोंकें, न मुझे होर्डिंग्स और विज्ञापनों के लिए इस्तेमाल करें। जब आप मुझ पर कील ठोंकते हैं या मुझे किसी विज्ञापन के लिए बांधते हैं, तो यह मुझे गहरा दर्द देता है। यह मेरी वृद्धि को रोकता है और कभी-कभी तो मेरे लिए मृत्यु का कारण भी बन जाता है। मेरी छाल में लगे घावों से कीड़े और रोगजनक प्रवेश कर जाते हैं, जो मुझे कमजोर कर देते हैं।

मैं यहाँ आपके लिए हूँ, आपकी सेवा में। कृपया मुझे प्यार दें, मेरी सुरक्षा करें। अगर आपको किसी संदेश को साझा करना है, तो इसके लिए अन्य साधन अपनाएं, लेकिन मुझे हानि पहुँचाकर नहीं।

हम सभी प्रकृति के एक हिस्से हैं और हमें एक-दूसरे की रक्षा करनी चाहिए। आपकी मदद से मैं और मेरे जैसे अन्य वृक्ष इस धरती को हरा-भरा बनाए रख सकते हैं। तो आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम वृक्षों पर कील नहीं ठोकेंगे और न ही उन्हें किसी भी प्रकार से क्षति पहुँचाएंगे।

आपका,
एक वृक्ष indiangreenbuddy@gmail.com

सिसौदिया जेल से छूटे, कईयों के दिल टूटे, केजरीवाल लिखने लगे क्या इस्तीफा ?

परिवहन विशेष एसडी सेठी।

नई दिल्ली। दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष.सिसौदिया के जेल से बाहर आने के बाद आप में कईयों के दिल बैठ गए है। सब अपनी प्रमोशन के ख्वाब देखने लगे थे। बडे-बडे धनुर्धर कयास लगाने लगे हैं कि जेल में कैद सीएम अरविंद केजरीवाल अब अपना इस्तीफा लिखने को तैयार हैं? दरअसल मनीष सिसौदिया जेल से छूटे,तो कईयों के दिल टूट गए है। केजरीवाल को एक मजबूत विकल्प सिसौदिया को माना जा रहा है। अगर मनीष सिसौदिया को सीएम बनाया जाता है तो आतिशी, जैसी मंत्री का अब क्या होगा? वह सीएम केजरीवाल के अंदर रहते हुए बाहर के मंत्रियो के विभागो को दोबारा तराशा जाएगा। मनीष को 15 अगस्त से पहले ये बडी जिम्मेदारी मिल सकती है। क्योंकि स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहराने की.जिम्मेदारी सिसौदिया निभा सकते है। बहरहाल सिसौदिया के बाहर आने के बाद आतिशी का कद छोटा होने की उम्मीद है। वह भावुक मुद्रा में आ गई है। दूसरा सौरभ भारद्वाज और आतिशी ने पार्टी की कमान संभाल ली थी। अब मनीष के बाहर आने के.बाद बिखरी शक्तियों का सिसौदिया में समाहित हो सकती है। बहरहाल हरियाणा और दिल्ली विधानसभा के चुनाव भी नजदीक आ गए है। इसकी तैयारी के मनीष सिसौदिया को सीएम बनना जरूरी है। अब देखना ये हैं कि आप के बीच से उंट किस करवट बैठेगा? ये तो वक्त ही बताएगा।

ग्राउंड अलॉटमेंट के लिए सरकारी विभागों के बीच फंसी रामलीला कमेटियां

सुषमा रानी

नई दिल्ली। राजधानी में मुगलकाल से रामलीला आयोजन हो रहा है, और तभी से लीला आयोजन के लिए आयोजको को 45 दिन के लिए ग्राउंड मिलता रहा है लेकिन इस वर्ष एमसीडी अधिकारियों की तुगलकी नीतियों के चलते लीला मंचन के लिए नगर निगम ने सिर्फ 15 दिन के लिए ही ग्राउंड अलॉट करने का फरमान जारी किया है, श्री रामलीला महासंघ के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने महासंघ की बैठक में बताया एमसीडी ने एक सर्कुलर संख्याडी 1एन सी /डीडीएच/ एच क्यू/एमसीडी/2023 _24/1065 दिनाक 11/10/2023 जारी करके लीला आयोजन के लिए ग्राउंड 15 दिन के देने का ऐलान किया इतनी कम अवधि में लीला मंचन करना असंभव है अर्जुन कुमार के मुताबिक हर वर्ष लीला आयोजन 11 दिन होता है, मंचन की तैयारियों के लिए विशाल पंडाल, भव्य स्टेज, बिजली आदि कार्य में 20 दिन लग जाते है, रामलीला आयोजन के लिए भूमि पूजन का कार्य पितृपक्ष से पूर्व होना भी जरूरी है, ऐसे में लीला आयोजन के लिए ग्राउंड 45 दिन पहले ही आंबटित होना जरूरी है

अर्जुन कुमार के अनुसार इस बार डीडीए ने अपने कई ग्राउंड ऑक्शन के लिए रिजर्व रख लिए है और कुछ ग्राउंड में ठेकेदारों ने ग्राउंड बुक करके अस्थाई ढांचे बना दिए है, ऐसे में पिछले कई सालो से यहां हो रही रामलीलाओ को ग्राउंड उपलब्ध नहीं हो पा रहा है, उन्होंने कहा डीडीए अपने सभी ग्राउंड की ऑनलाइन बुकिंग करता है, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे इन ग्राउंड में होने वाली रामलीला कमेटी को पहले ग्राउंड उपलब्ध हो सके।

अर्जुन कुमार ने आगे कहा सभी रामलीला आयोजक प्रभु श्री राम के आदर्श, शिक्षाओ को जन जन तक ले जाने के उद्देश्य से लीला मंचन करती है, लीला मंचन देखने हर धर्म के हजारों दर्शक आते है।

अर्जुन कुमार के अनुसार जब श्री मदन लाल खुराना दिल्ली के मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने रामलीलाओं में यूज होने वाली बिजली की कमर्शियल दरो को हटाकर घरेलू दरो को लागू किया था, लीला ग्राउंड भी 45 दिन के लिए अलॉट हुआ करते थे, वहीं शीला दीक्षित सरकार ने भी लीला कमेटीयो को अनेक सुविधाओ के साथ ग्राउंड उपलब्ध कराए।

श्रीरामलीला महासंघ के जनरल सेक्रेटरी सुभाष गोयल ने मांग की दिल्ली पुलिस, पुलिस लाइसेंस की परक्रिया आसान हो और कम से कम शर्तो द्वारा किया जाए।

इस बैठक में चांदनी चौंक के सांसद प्रवीन खंडेलवाल भी पधारे और उन्होंने लीला आयोजको की सभी समस्याओं को ध्यान पूर्वक सुना और कहा मैं इस बारे में दिल्ली के सभी सांसदों से विचार विमर्श करूंगा और राम लीला से जुड़ी सभी समस्याओ के समाधान के लिए वन विंडो सिस्टम लागू करवाने का प्रयास करूंगा।

नरेला फेडरेशन ने ग्रामीण महिला खेल कूद प्रतियोगिता का किया आयोजन

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नई दिल्ली। उत्तरी बाहरी दिल्ली के गांव हमीद पुर में चूला- चौका, और खेती- बाडी से बाहर निकालने की गर्ज से उनमें महिला शस्त्रीकरण के तहत मजबूती देने के लिए फेडरेशन ऑफ नरेला सब्सिटी की ओर से ग्रामीण महिलाओ के लिए खेल कूद प्रतियोगिता का विशेष आयोजन किया गया। जिसमें विशेष कबड्डी,लेमन दौड,मटका दौड,रस्साकशी,म्यूजिक दौड़ के साथ-साथ अन्य खेलो का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रामीण अंचल के सैंकडो,बच्चौ, व यंग, तथा अधेड महिलाओ ने भी बढ-चढ कर भाग लिया। खेल प्रतियोगिता में प्रथम, दिव्तीय व तृतीय आने वाली महिलाओ के अलावा भाग लेने वाली सभी महिलाओ को सान्त्वना पुरस्कार स्वरूप फेडरेशन की ओर से मेडल एवं सर्टिफिकेट दिए गए। इस अवसर पर फेडरेशन के अध्यक्ष जोगिन्दर दहिया ने कहा कि इस प्रकार के खेलों का आयोजन से महिलाओ में उत्साह बढता है। ग्रामीण समाज में इस प्रकार के आयोजन समय-समय पर आयोजित होने चाहिए। वहीं खेलकूद आयोजन समिति की बबीता मान ने कहा कि गांव की महिलाए घर के कामों में लगी रहती है,जिससे उन्हें खेलने का मौका नहीं मिलता है। उन्होने कहा कि इस कार्यक्रम से यह साबित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाए किसी से कम नहीं है। वहीं फेडरेशन के उपाध्यक्ष धीरज खत्री ने कहा कि हमारी संस्था द्वारा जो खेल कूद प्रतियोगिता के आयोजन से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओ में उर्जा का संचार होगा और उन्हें स्वास्थ्य लाभ भी होगा। फेडरेशन के कोषाध्यक्ष धनंजय सिंह, रंजीत पांडे समेत उपस्थित गणमान्य लोगों ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओ ने इस खेल प्रतियोगिता से बहुत कुछ सीखा है।

ऐक्टर सलीम दीवान और निर्देशक प्रीति सिंह ने थ्रिलर फिल्म से जुड़े कई रहस्य खोले

सुषमा रानी

नई दिल्ली। विनय पाठक, राइमा सेन और सलीम दीवान जैसे वर्सटाइल ऐक्टर्स के अभिनय से सजी थ्रिल और रोमांच से भरपूर फिल्म "आलिया बसु गायब है" 9 अगस्त 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज़ के लिए तैयार है। ऐसे में इसकी टीम मीडिया के माध्यम से दर्शकों को इस फ़िल्म के बारे में बता रही है। इस थ्रिलर फिल्म की टीम राजधानी दिल्ली मीडिया प्रोमोशन के लिए गई वहां मीडिया हाउसेज में इंटरव्यू दिया और लोगों से मिलकर फ़िल्म का प्रचार किया। यहां फ़िल्म के दमदार कलाकार सलीम दीवान और महिला निर्देशक प्रीति सिंह मौजूद रहीं।

बता दें कि रिहैब पिक्चर्स के बैनर तले बनी फिल्म आलिया बसु गायब है का निर्माण डॉ सत्तार दीवान और जोनु राणा ने किया है।

प्रीति सिंह द्वारा निर्देशित इस फ़िल्म के ट्रेलर ने दर्शकों के बीच रोमांच और उत्सुकता पैदा कर दी है और लोग इसको बिग स्क्रीन पर देखने का इन्तजार कर रहे हैं।

ऐक्टर सलीम दीवान ने कहा कि 'फ़िल्म की कहानी बड़ी रोमांचक है, मैंने इसमें एक अपहरण करने वाले का किरदार निभाया है। आलिया बसु गायब है में मनोरंजन भी है और रोमांच भी। विनय पाठक और राइमा सेन जैसे प्रतिभाशाली कलाकारों के साथ स्क्रीन साझा करना किसी लर्निंग एक्सपीरिएंस से कम नहीं रहा। मैं फिल्म के रिलीज होने पर दर्शकों का रिस्पांस देखने के लिए बेचैन हूं।

डायरेक्टर प्रीति सिंह ने बताया कि इस फ़िल्म मे राइमा एक दौलतमंद की बेटी आलिया का कैरेक्टर प्ले कर रही हैं, जिनका अपहरण हो जाता है। फ़िल्म में उन्होंने एक डीग्लैम भूमिका निभाई है और उनके कई जबरदस्त एक्शन सीन भी हैं। दर्शकों को राइमा का एक अलग ही रूप देखने को मिलेगा जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया। फ़िल्म में कई चौंकाने वाले ट्विस्ट भी हैं। फ़िल्म "आलिया बसु ग़ायब हैं" 9 अगस्त से सिनेमागृहों में दर्शकों के लिए साल के सबसे बड़े ट्विस्ट और टर्न के साथ चौकाने के लिये तैयार हैं।

सात दिन की तेज बारिश में मानसून का 91 फीसदी कोटा पूरा, जलभराव और ट्रैफिक जाम रही समस्या

राजधानी में आज सुबह बारिश हुई। भारतीय मौसम विभाग (IMD) का मानना है कि शुक्रवार को आसमान में बादल छाए रहेंगे। दिल्ली में एक जून से आठ अगस्त तक 582 .4 मिमी वर्षा दर्ज की गई। जबकि मानसून की सामान्य वर्षा 640 .3 मिमी है। कुल मिलाकर बात करें तो जितनी बारिश अब तक होनी थी उससे कहीं ज्यादा हो चुकी है।

नई दिल्ली। इस साल दिल्ली में मानसून की वर्षा सामान्य से कहीं अधिक चल रही है। हालांकि यह बात अलग है कि अभी तक जितनी भी वर्षा हुई है, उसका लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा केवल सात दिनों में ही बरसा है। इसके कारण एक तरफ दिल्ली वासियों को जलभराव एवं यातायात जाम जैसी परेशानी झेलनी पड़ी तो दूसरी तरफ उमस भरी गर्मी का भी सामना करना पड़ा।

दिल्ली में इस बार मानसून में मौसम का रुख शुरू से ही अलग देखने को मिल रहा है। यहां तक कि मौसम विभाग के पूर्वानुमान भी सटीक साबित नहीं हो पा रहे हैं। मौसम विभाग के अभी तक के आंकड़ों पर निगाह डालें तो एक जून से आठ अगस्त के दौरान दिल्ली की मानक वेधशाला सफदरजंग में 582.4 मिमी वर्षा हुई है।

सामान्य तौर पर इस समयावधि में 325.0 मिमी वर्षा होती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मानसून के चारों माह जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर में औसत 640.3 मिमी वर्षा होती है। मतलब इस बार अभी तक सामान्य से डेढ़ गुना से भी ज्यादा पानी बरसा है।

समस्या यह है कि इस वर्षा का ज्यादातर हिस्सा सिर्फ सात दिनों में बरसा है। 28 जून को तो सिर्फ चौबीस घंटे के भीतर ही 228.1 मिमी पानी बरस गया था। जबकि, एक अगस्त को भी 107.6 मिमी वर्षा हुई थी। इन सात दिनों के अलावा बाकी दिनों में या तो हल्की बूंदाबांदी हुई है या फिर तेज धूप खिली रही।

विशेषज्ञों का कहना है कि एक साथ बहुत ज्यादा वर्षा हो जाने से इस पानी का सदुपयोग नहीं हो पाता। अगर थोड़ा थोड़ा पानी बरसे तो ही उसका संचयन संभव है और तभी वह कृषि कार्यों के लिए भी उपयोगी हो सकता है।

इन सात दिनों में बरसा लगभग 85 प्रतिशत पानी

7 अगस्त	21.0 मिमी
1 अगस्त	107.6 मिमी
26 जुलाई	39.4 मिमी
24 जुलाई	27.0 मिमी
23 जुलाई	31.9 मिमी
10 जुलाई	30.8 मिमी
28 जून	228.1 मिमी

बृहस्पतिवार को दिल्ली में कहीं कहीं हुई हल्की वर्षा

बृहस्पतिवार को दिल्ली में दिन भर बादलों की आवाजाही चलती रही तो कहीं कहीं बूंदाबांदी और हल्की बरसात भी देखने को मिली। इसके चलते उमस भरी गर्मी के तेवर भी अपेक्षाकृत ढीले ही रहे। अधिकतम तापमान सामान्य स्तर पर 34.1 डिग्री जबकि न्यूनतम सामान्य से एक डिग्री कम 25.4 डिग्री सेल्सियस रहा।

गाजियाबाद में ट्रैक्टर तिरंगा मार्च लेकर आ रहे किसानों को पुलिस ने रोका

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद में आज किसानों ने ट्रैक्टर तिरंगा मार्च लेकर जिला मुख्यालय की ओर कूच किया। जिसके बाद भारी पुलिस बल की मौजूदगी के बाद सभी को रोका गया। किसानों की मांग है कि कई किसान नेताओं को नजरबंद किया गया है। जिन्हें रिहा किया जाए। यह मार्च नोएडा में भी निकाला गया। किसानों से एक लेन खाली कराकर दोनों तरफ का ट्रैफिक निकाला जा रहा है।

गाजियाबाद। ट्रैक्टर तिरंगा मार्च लेकर जिला मुख्यालय आ रहे किसानों को जनपद में कई स्थानों पर पुलिस ने रोक दिया है। मेरठ रोड पर दुहाई पर नाराज किसान सड़क पर ही धरने पर बैठ गए हैं। किसानों का कहना है कि जनपद में कई किसान नेताओं को नजरबंद किया गया है।

भाकियू ने आज किसान ट्रैक्टर मार्च जिला मुख्यालय तक लाने की घोषणा की हुई थी। इसे देखते हुए पुलिस ने सुबह जनपद में कई किसानों को उनके घर मे ही नजरबंद कर दिया। कुछ किसान जब दुहाई पहुँचे तो पुलिस ने उन्हें आगे नहीं जाने दिया।

ग्रेटर नोएडाः कलक्ट्रेट के पास किसानों के ट्रैक्टर तिरंगा मार्च का पुलिस द्वारा रूट डायवर्ट करने के दौरान मोसरबीयर गोलचक्कर के पास रुके किसान लगा जाम

दुहाई पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। रोके जाने से नाराज किसानों ने दुहाई पर ही धरना शुरू कर दिया है। भाकियू जिलाध्यक्ष बिजेंद्र सिंह को भी सुबह नजरबंद का आरोप किसानों ने लगाया है।

छज्जा गिरने से दो गाड़ियां क्षतिग्रस्त, कॉलोनी में मचा हड़कंप; लापरवाही की वजह से हुआ हादसा

परिवहन विशेष न्यूज

डीएलएफ फेस-2 स्थित ऑक्यूड एस्टेट सोसायटी के डी टावर में गुरुवार रात को अचानक छज्जा गिरने से हादसा हो गया। छज्जा गिरने से दो गाड़ियां क्षतिग्रस्त हो गई हैं। वहीं एक बच्चा हादसे में चोटिल होने से बाल-बाल बच गया। वहीं मकान का छज्जा गिरने से लोगों में हड़कंप मच गया। उन्होंने कहा कि लापरवाही की वजह से हादसा हुआ है।

गुरुग्राम। डीएलएफ फेस-2 स्थित ऑक्यूड एस्टेट सोसायटी के डी टावर में स्टिल्ट पार्किंग के ऊपर फ्लैट नो डी-72 और डी-41 की तरफ का छज्जा गिरने से दो गाड़ियां क्षतिग्रस्त हो गई। गनीमत रही कि उस समय गाड़ी के आसपास कोई मौजूद नहीं था अन्यथा कोई बड़ा हादसा हो सकता था।

इस सोसायटी का रख-रखाव ऑक्यूड एस्टेट कंडोमिनियम एसोसिएशन की तरफ से किया जा रहा था। छज्जा गिरने से पहले इसमें रिपेयरिंग का काम किया जा रहा था। स्थानीय निवासियों का कहना है कि रिपेयरिंग में लापरवाही बरती जा रही थी। डी टावर के फ्लैट नंबर 72 के निवासी अमित पुरी ने बताया कि आरडब्ल्यूए द्वारा रिपेयरिंग का काम कराया जा रहा था, जिसमें ठीक ढंग से भवन सामग्री का प्रयोग और तकनीकी प्रक्रिया भी ठीक से नहीं अपनाई गई थी।

परेशानियों को लेकर बिल्कुल गंभीर नहीं

एसोसिएशन सोसायटी के स्ट्रक्चरल परेशानियों को लेकर बिल्कुल गंभीर नहीं हैं। इससे पहले भी कई बार स्ट्रक्चरल से संबंधित परेशानियां लोगों ने झेली है, लेकिन एसोसिएशन ने कभी इसे गंभीरता से नहीं लिया।

इस सोसायटी को करीब 17 साल पहले डीएलएफ प्रबंधन की तरफ से कंडोमिनियम एसोसिएशन को रख-रखाव के लिए हैंडओवर किया गया था। इस सोसायटी में कुल चार टावर हैं, जिनमें करीब 300 फ्लैट हैं और सभी फ्लैट ऑक्यूपाइड हैं।

शिकायत करेंगे लोग

निवासियों का कहना हैं कि शुक्रवार को अब टाउन एंड कंट्री प्लानिंग के निदेशक, उपायुक्त गुरुग्राम और डीटीपी एनफोर्समेंट को इसकी शिकायत की जाएगी। जिला प्रशासन से सोसायटी का जल्द से जल्द स्ट्रक्चरल ऑडिट कराने की मांग की जाएगी। हादसे के बाद लोगों की शिकायत पर डीएलएफ फेस टू थाने से पुलिस भी पहुंची। हालांकि, अभी तक कोई मामला दर्ज नहीं किया गया हैं। सोसायटी की कंडोमिनियम एसोसिएशन के अध्यक्ष भी मौके पर पहुंचे, लेकिन अभी किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया।

मथुरा में खुलेंगे उद्योग के लिए दरवाजे, सांसद हेमा मालिनी ने CEO डॉ. अरुण सिंह के साथ की अहम बैठक

मथुरा के लिए एक अच्छी खबर है। अब मथुरा में उद्योग के लिए दरवाजे खुलने वाले हैं। दरअसल सांसद हेमा मालिनी ने मथुरा में उद्योग और संस्थागत गतिविधियों की शुरुआत को लेकर यमुना प्राधिकरण सीईओ डॉक्टर अरुण वीर सिंह के साथ मीटिंग की है। इस दौरान उन्होंने बैठक में अधिसूचित क्षेत्र में उद्योग और संस्थाओं की स्थापना का आग्रह किया।

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा। मथुरा में उद्योग और संस्थागत गतिविधियों की शुरुआत को लेकर सांसद हेमा मालिनी ने यमुना प्राधिकरण सीईओ डॉक्टर अरुण वीर सिंह के साथ बैठक की।

उन्होंने प्राधिकरण के अधिसूचित क्षेत्र में उद्योग और संस्थाओं की स्थापना का आग्रह किया। यमुना प्राधिकरण अगले 15 दिन में इसकी रूपरेखा तैयार कर संसद के साथ बैठक करेगा।

प्राधिकरण ने मथुरा जिले के राया और बजाना में जमीन अधिग्रहण कर उद्योग और संस्थाओं की स्थापना का प्रस्ताव दिया है। इस पर अंतिम फैसला मथुरा में इन्वेस्टर मीट कर लिया जाएगा। इसमें उद्योग जगत और संस्थाओं से क्षेत्र के विकास को लेकर सुझाव लिए जाएंगे।

तैयार होगी रूपरेखा

इसके आधार पर ही फाइनल रूपरेखा तैयार होगी। यमुना प्राधिकरण मथुरा जिले के राय में हेरिटेज सिटी परियोजना पर काम कर रहा है। इसकी डीपीआर तैयार हो चुकी है। जमीन अधिग्रहण का कार्य जल्द शुरू होने की उम्मीद है।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने निकाली पांच आवासीय भूखंड योजना, 3718 वर्ग मीटर जमीन होगी आवंटित

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने पांच आवासीय भूखंडों की योजना निकाली है। ये भूखंड चाई श्री व चाई फोर में स्थित हैं। ये भूखंड 524, 505, 639, 1026 और 1023 वर्ग मीटर के हैं। इन पांच भूखंडों से 3718 वर्ग मीटर जमीन आवंटित होगी और पांचों भूखंडों के आवंटित होने पर रिजर्व प्राइस के हिसाब से लगभग 17 करोड़ रुपये की प्राप्ति होगी।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के एसीईओ आशुतोष कुमार द्विवेदी ने बताया कि इन भूखंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन शुक्रवार से शुरू हो जाएंगे। योजना में पंजीकरण की अंतिम तिथि दो सितंबर हैं। आवंटन होते ही इन भूखंडों पर पजेशन भी मिल जाएगा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार का कहना है कि ग्रेटर नोएडा में ग्रीनरी एनसीआर में सबसे अधिक है। इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी के लिहाज से अन्य शहरों के मुकाबले ग्रेटर नोएडा बेहतर है। रिहायश के लिए ग्रेटर नोएडा बहुत बेहतर विकल्प है।

गुरुग्राम के बंद घर में मिला 762 किलो गांजा, सरपंच के सामने तोड़ा गया ताला तो हैरान रह गई पुलिस

परिवहन विशेष न्यूज

पुलिस ने बताया कि इस दौरान ड्यूटी मजिस्ट्रेट को नियुक्त किया गया जिसके बाद गांव के सरपंच और एक गार्ड की मौजूदगी में घर का ताला तोड़ा गया। वहीं इस पूरी छापेमारी की वीडियोग्राफी भी की गई है। पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि जांच के दौरान टीम को प्लास्टिक की बोरियों में 762 .15 किलो अवैध गांजा मिला।

गुरुग्राम। गुरुग्राम के पटौदी क्षेत्र के नानू खुर्द गांव में एक खाली घर से गांजे का जखीरा बरामद किया गया है। गुरुग्राम पुलिस ने छापा मारकर 762.15 किलो अवैध गांजा बरामद किया, जिसकी बाजार में कीमत करोड़ों रुपये की है। पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर इंस्पेक्टर संदीप कुमार के नेतृत्व में डीएलएफ फेज 4 क्राइम यूनिट की टीम ने सोमवार रात नानू खुर्द गांव के एक घर में छापा मारा। पुलिस वहां पहुंची तो घर बंद मिला। इसके बाद पुलिस की टीम ने दौलताबाद कुनी गांव के मूल निवासी मकान मालिक राम सिंह से संपर्क किया।

गांव के सरपंच और गार्ड की मौजूदगी में घर का ताला तोड़ा

पुलिस ने बताया कि इस दौरान ड्यूटी मजिस्ट्रेट को नियुक्त किया गया, जिसके बाद गांव के सरपंच और एक गार्ड की मौजूदगी में घर का ताला तोड़ा गया। वहीं, इस पूरी छापेमारी की वीडियोग्राफी भी की गई है।

तस्करों की धरपकड़ के लिए छापेमारी कर रही पुलिस

पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि जांच के दौरान टीम को प्लास्टिक की बोरियों में 762.15 किलो अवैध गांजा मिला। बाद में पटौदी पुलिस स्टेशन में एक अज्ञात संदिग्ध के खिलाफ नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की गई। इतनी भारी मात्रा में गांजा मिलने के बाद पुलिस तस्करों की धरपकड़ के लिए छापेमारी कर रही है।

घर पिछले कुछ सालों से खाली था- एसीपी

गुरुग्राम के एसीपी वरुण दहिया ने बताया कि घर पिछले कुछ सालों से खाली था और घर के मालिक का दावा है कि उसने कभी अपना घर किराए पर नहीं दिया। हम तस्करों की तलाश कर रहे हैं। यानी कि मकान मालिक के दावे के मुताबिक उसके घर में गांजा कैसे आया उसे नहीं मालूम।

शिक्षा प्रणाली: तब और अब : विजय गर्ग

अब शिक्षा हर समूह के लिए 'तथाकथित' हो गई है क्योंकि इसकी शिक्षाएँ छात्रों और अभिभावकों सहित शिक्षक दैनिक गतिविधियों में शामिल नहीं करना चाहते हैं। शिक्षा व्यवस्था स्वयं बर्बादी की राह पर है। शिक्षा परिप्रेक्ष्य- शिक्षा के बहुत सारे अलग-अलग अर्थ हैं जो हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होते हैं लेकिन मेरे अनुसार, यह जादू की तरह है जो मानव व्यक्तित्व और उनके सोचने के तरीके को पूरी तरह से बदल देता है। लेकिन यह काले जादू की तरह काम कर रहा है क्योंकि छात्र, शिक्षक और सिस्टम स्वयं इस शक्तिशाली शब्द ₹शिक्षा₹ का वास्तविक अर्थ गलत समझ रहे हैं। शिक्षा का लाभ- जिस प्रकार एक घर बनाने के लिए ईंटों और सीमेंट की आवश्यकता होती है उसी प्रकार एक शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे सिस्टम की नींव के लिए जिम्मेदार हैं। शिक्षक ही हैं जिनके कारण हमारे पास डॉक्टर, इंजीनियर, पुलिसकर्मी हैं और वे ही हैं जो समाज को जीवन जीने की कला बताते हैं। जैसे सुनार सोने को चमक प्राप्त करने और उसमें चमक लाने के लिए उच्च तापमान पर प्रज्वलित करता है, वैसा ही संबंध गुरु और शिष्य के बीच होता है। शिक्षक-छात्रों की आज की स्थिति- लेकिन आज का ₹गुरु₹ शिक्षक बन गया और ₹शिष्य₹ छात्र बन गया। दोनों का रिश्ता अब बदल गया है. शिक्षकों ने इसे व्यावसायिक कार्य के रूप में लिया और छात्रों ने इसे आपत्तिजनक मामले के रूप में लिया। अतीत को रोशन करना- प्राचीन काल में पीछे जाने पर पता चलता है कि दोनों के बीच का रिश्ता अनुशासन, सच्चाई और नैतिकता से भरा हुआ था। जैसे हमें दूध को हिलाकर मक्खन निकालने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है, वैसे ही गुरु अपने शिष्य को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए काम करते हैं ताकि युवा पीढ़ी परंपरा को समझ सके और उस उच्च स्तर तक प्रदर्शन कर सके। उस समय गुरु ने अपने शिष्यों को भोजन देने से लेकर रहने की जगह देने तक का ख्याल रखा। वर्तमान में क्या हो रहा है- आज की स्थिति बिल्कुल विपरीत है क्योंकि शिक्षा देने का माध्यम स्वार्थी हो गया है। वे अपने छात्रों को अपने बेटे की तरह नहीं मानते। उन्होंने इसे पैसा कमाने का जरिया बना लिया. शिक्षकों की रणनीतियाँ- आजकल शिक्षकों ने प्रचार के लिए जो रणनीति अपनाई है, वह यह है कि उन्होंने अपने छात्रों को परीक्षा के पेपर लीक करना शुरू कर दिया है, उन्हें केवल चुनिंदा प्रश्न दिए जाते हैं, जिससे छात्रों का दिमाग खराब हो रहा है और इसका मुख्य परिणाम यह है कि वे प्रतियोगी परीक्षा पास करने में असमर्थ हैं, जहां हर कोई सब कुछ अज्ञात है. छात्र तब और अब- केवल एक समूह को दोष देना उचित नहीं है; छात्रों की भी बराबर की भागीदारी है। वे भूल जाते हैं कि उन्हें अपने शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। पीछे जाकर स्थितियों का अवलोकन करें तो शिष्य अपने गुरु को अपने पिता के समान मानते हैं और उनका आदर करते हैं। प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली- प्राचीन काल में दी जाने वाली शिक्षा से आधुनिक शिक्षा प्रणाली में काफी बदलाव आया है। कई वर्षों पहले छात्रों को वेद, विज्ञान और गणित सीखना सिखाया जाता था। शिक्षकों को अपने छात्रों से कोई शुल्क लेने की अनुमति नहीं थी, यदि ऐसा करना पाप माना जाता था। शिक्षा देने का माध्यम मौखिक था। छात्र पढ़ाई के लिए पूरी तरह से अपने शिक्षकों पर निर्भर थे। प्राचीन काल अध्ययन के नियम- उस समय अनेक अनुष्ठान करके तथा अपना घर छोड़कर शिक्षा आरंभ करने के लिए विद्यार्थी की आयु 5 वर्ष होती थी। छात्र अपने शिक्षकों को सम्मान देते थे और शिक्षकों से ऊंची सीटें नहीं लेते थे। पाठ्यक्रम के अंत के बाद, शिक्षक को सम्मानित करने के लिए छात्र उन्हें गुरु दक्षिणा के रूप में धन्यवाद देते हैं। पाठ्यक्रम समाप्त करने का मतलब यह नहीं है कि उन्हें प्रश्नों के लिए अपने शिक्षक के पास आने का कोई अधिकार नहीं है; वे आने, पूछने के लिए स्वतंत्र हैंऔर उनके शिक्षकों से मिलें। उस दौर में ये काफी लंबे समय तक चलने वाला रिश्ता था. उस समय लोग समाज की भलाई के लिए शिक्षा को अनिवार्य मानते थे। आधुनिक शिक्षा के प्रमुख मुद्दे- लेकिन आज का परिदृश्य बिल्कुल बदल गया है. आजकल स्कूल में शिक्षक इतने शिक्षित नहीं हैं कि वे छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकें। वे क्या कर रहे हैं कि अपना स्कूली जीवन पूरा करने के बाद वे शिक्षक बनने जा रहे हैं और दिलचस्प तथ्य यह है कि स्कूल स्वयं इन शिक्षकों को नियुक्त करने में रुचि रखते हैं ताकि उनका खर्च कम हो। प्रौद्योगिकी के विपक्ष- कहते हैं शिक्षक कुम्हार की तरह होते हैं जो मिट्टी को आकार देते हैं लेकिन कुम्हार खुद ही मिट्टी को आकार देने के लिए छोड़ दे तो क्या यह संभव है! इसके लिए एक बड़ी मनाही। लेकिन अभी शिक्षक और प्रोफेसर अपने छात्रों के साथ यही कर रहे हैं। वे कक्षाओं को गंभीरता से नहीं लेना चाहते और अपने छात्रों का उचित मार्गदर्शन नहीं करना चाहते। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को Google इत्यादि जैसी प्रौद्योगिकी पर निर्भर रहने के लिए कहते हैं। किसी विषय पर उचित व्याख्यान दिए बिना छात्रों को किताबें पढ़ने के लिए कहा गया। यह बढ़ती प्रौद्योगिकी का लाभ है जिसका वे उपयोग कर रहे हैं। चर्चा योग्य एक ज्वलंत समस्या- अगर आपके घर में आपकी पसंदीदा जगह आपके भाई, बहन या किसी और के लिए आरक्षित हो जाए तो आपको कैसा महसूस होता है? ठीक यही चल रहा है हमारी शिक्षा व्यवस्था यानि आरक्षण में। कुछ पहलुओं में, यह सही है क्योंकि कुछ समुदायों का हर जगह शोषण किया जाता था, लेकिन इसकी एक बड़ी खामी है क्योंकि इस प्रणाली के कारण कई योग्य उम्मीदवारों को उनकी कड़ी मेहनत का वास्तविक फल नहीं मिलता है और किसी तरह यह जातिवाद को भी जन्म देता है। एक अच्छा दृश्य- आज की शिक्षा प्रणाली में कुछ अच्छे बिंदु हैं जिन्हें उजागर करने की आवश्यकता है। हर किसी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। पहले से ज्यादा चीजें पढ़ने और समझने के लिए। प्राचीन की तुलना में यहां अधिक सुविधाएं हैं। अपने आप का, अपने सपनों का, अपने जुनून का पालन करें- सपने, कितना खूबसूरत शब्द है और हर कोई अपने सपनों को पूरा करना चाहता है लेकिन सपनों को पूरा करने के पीछे की रणनीति को तुरंत समझने की जरूरत है। छात्रों को जो चाहिए उसे पाने के लिए चतुराई से काम करने की आवश्यकता है अन्यथा अन्य लोग अपने सपनों को पूरा करने के लिए उनका फायदा उठा सकते हैं। इसलिए उस रास्ते को जारी रखें जो आपके सपनों की ओर ले जाता है।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

मन-मस्तिष्क की महक

हुधा जब जीवन की डगर अजीब, अज्ञात और अबूझ होती है तो व्यक्तिगत नियम- कायदे से नहीं चलती। आम मान्यता है कि खाली दिमाग शैतान का घर है। यह तभी होता है, जब हम खालीपन को भरना न जानते हों। खिन्नता से बहुत सारी नकारात्मकता से भरे मन के कारण हम उन्नति की दौड़ में खुद विघ्न बन जाते हैं। आध्यात्मिक मार्ग खुद को कूड़े-कबाड़ से मुक्त होने पर जोर देता है, ताकि ईश्वरीय ऊर्जा से खालीपन भर सकें। प्राकृतिक नियम संचालन जीवन पर अपना असर रखता है। अमूमन हम जिस वस्तु या उपलब्धि को चाहते हैं और वह न मिले तो फिर हम बलात उसे हासिल करने में जुट जाते हैं। ऐसे में अमूल्य समय के साथ-साथ ऊर्जा की बर्बादी होती है। मन में बहुत सारी नकारात्मकता उफान पर होती है। हमारी सोच जितनी स्वच्छ होगी, जीवन उतना ही श्रेष्ठ होगा। प्रकृति के पहलू पर किसी का शिकंजा नहीं चला और उसकी चाहत है कि हमारे जीवन और मन में कुछ रिक्तता रहे, ताकि उचित समय पर उसमें कोई उपयुक्त सामग्री भरी जा सके। सोच का प्रभाव मन पर, मन का प्रभाव तन पर, तन और मन दोनों का प्रभाव सारे जीवन पर असर छोड़ता है। दुनिया पर जीत हासिल करने से पहले अपने मन पर जीत हासिल करना जरूरी है। जो लोग मन में उतरते हैं, उन्हें संभाले रखने और जो मन से उतरते हैं, उनसे संभल कर रहने की जरूरत है। दुखी मन पानी से भरे गिलास की तरह होता है, जो मामूली ठेस लगने पर छलक पड़ता है। मन को कर्तव्य की डोरी से बांधना पड़ता है, नहीं तो उसकी चंचलता न जाने कहां लिए - लिए फिरे। यह सनातन रहस्य है कि जैसा मन होता है, वैसा ही मनुष्य बन जाता है। मन भर कर जीयो, मन में भरकर मत जीयो ! मन सभी के पास है, मगर मनोबल कुछ के पास ही होता है।

मन ऐसा रखना चाहिए कि किसी को बुरा न लगे। मन को संभालने वाला इंसान हमेशा जिंदगी की ऊंचाइयों में सबसे ऊपर होता है। समाज से बहुत दिनों तक दूर और अकेले रहना आदमी के मन को दुर्बल बनाता है। मन की संतुष्टि के लिए अच्छे काम करते रहना चाहिए। मन की सोच सुंदर हो तो संसार सुंदर लगता है। छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता और टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता। मन का झुकना बहुत जरूरी है। मात्र सिर झुकाने से परमात्मा नहीं मिलते।

इंसान की आर्थिक स्थिति कितनी भी अच्छी हो, लेकिन सही आनंद लेने के लिए उसकी मानसिक स्थिति अच्छी होनी चाहिए। एक व्यक्ति दूसरे के मन की बात जान सकता है। कभी भी खाली नहीं बैठना चाहिए, कोई-न-कोई रचनात्मक काम अवश्य करते रहना चाहिए। उससे मन बुरे विचारों में नहीं उलझेगा। कहने को बहुत अपने होते हैं, लेकिन जब मन उदास हो तो कोई पूछने वाला नहीं होता। मैदान में हारा हुआ आदमी फिर से जीत सकता है, लेकिन मन से हारा आदमी कभी नहीं जीत सकता।

ऐसा देखा गया है कि अस्वस्थ होने पर हम चिकित्सक के पास जाते हैं और अगर मन स्वस्थ न हो तो उसके इलाज या उपचार के लिए कहीं नहीं जाते। न ही ऐसे उपाय करते हैं जिनसे से मन स्वस्थ होने की ओर बढ़े। यही जीवन की दुखद त्रासदी है। मन दुखी है तो उससे पूछना चाहिए कि कितना और कब तक दुखी होना हैं ! मन तृप्त हो तो बूंद भी बरसात है। अतृप्त मन के आगे तो समंदर की भी क्या हैसियत है ? मन और मकान को समय- समय पर साफ करना जरूरी है, क्योंकि मकान में बेमतलब सामान और मन में बेमतलब गलतफहमियां भर जाती हैं। मन की प्रसन्नता बहुत से मानसिक और शारीरिक रोग दूर रहते हैं। विचार में विषाद नहीं होना चाहिए, क्योंकि विषाद बहुत बड़ा दोष है। खुश रहने का एक सीधा-सा मंत्र है- कौन क्या कर रहा है, कैसे कर रहा है, क्यों कर रहा है, इससे जितना दूर रहा जाए, मन की शांति उतनी ही नजदीक होगी। परिस्थिति बदलना मुश्किल न हो तो मन (की स्थिति बदल देना चाहिए। सब कुछ अपने आप बदल जाएगा। अच्छी मानसिकता से ही अच्छा जीवन जीया जाता है। मानसिक बीमारियों से बचने का उपाय है कि हृदय को घृणा से और मन को भय व चिंता से मुक्त रखा जाए। अस्वस्थ मन से उत्पन्न कार्य अस्वस्थ होते हैं। मानसिक उन्नति के बाद शरीर अधिक ताकतवर और स्वस्थ बन जाता है। निर्मल मन वाला व्यक्ति आध्यात्मिक अर्थ को सही से समझ सकता है। इंसान जितना अपने मन को मनाएगा, उतना खुश रह पाएगा। जो दूसरों से ईर्ष्या करता है, उसे मन की शांति नहीं मिलती।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

बोकारो स्टील प्लांट में पर्यावरण अनुकूल इलेक्ट्रिक वाहनों का होगा उपयोग

परिवहन विशेष न्यूज

बोकारो स्टील प्लांट में पर्यावरण अनुकूल इलेक्ट्रिक वाहनों का होगा उपयोगबोकारो इस्पात संयंत्र के मुख्य महाप्रबंधक स्तर के अधिकारियों को दैनिक उपयोग के लिए पर्यावरण अनुकूल इलेक्ट्रिक वाहन दिए जा रहे हैं। गुरुवार, 08 अगस्त को इस्पात भवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी निदेशक बीरेंद्र कुमार तिवारी ने सात वरीय मुख्य महाप्रबंधकों को इलेक्ट्रिक कार की चाबी सौंपी। संयंत्र के अंदर व बाहर इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन भी स्थापित किए जा रहे हैं। इलेक्ट्रिक वाहन पर्यावरण अनुकूल होने के साथ-साथ आवाज रहित, उपयोग में सुविधाजनक व नवीनतम तकनीक से लैस हैं। बीएसएल की ओर से चरणबद्ध तरीके से टाटा नेक्सन ईवी के कुल 65 इलेक्ट्रिक वाहन मंगवाए जा रहे हैं। बोकारो स्टील प्लांट पर्यावरण संरक्षण के लिए कई अभिनव पहल कर रहा है, जिसमें डी-कार्बोनाइजेशन के माध्यम से पर्यावरण अनुकूल हरित इस्पात का उत्पादन, सर्कुलर इकोनॉमी की अवधारणा के तहत अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण शामिल है। हाल ही में हस्तशिल्प प्रशिक्षण केंद्र में कार्बन सिंक विकसित करने के लिए आठ विभिन्न प्रजातियों के 1800 बांस के पौधे लगाए गए हैं।बीएसएल के प्रभारी निदेशक बीरेंद्र कुमार तिवारी ने कहा कि यह पहल बोकारो स्टील प्लांट के डी-कार्बोनाइजेशन रोड मैप और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के प्रयासों का एक हिस्सा है। इससे दीर्घकालिक सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

जयपुर आरटीओ ने पेश किया नया प्रस्ताव, 40 हजार ई-रिक्शाओं का होगा बंटवारा

परिवहन विशेष न्यूज

जयपुर में सुचारू यातायात में बाधा बने ई-रिक्शा के सुचारू संचालन के लिए जयपुर आरटीओ ने नया प्रस्ताव तैयार किया है। राजधानी में 40 हजार ई-रिक्शा का वितरण अब नगर निगम जोन के आधार पर नहीं बल्कि पुलिस थानों के हिसाब से किया जाएगा।

जयपुर में दौड़ रहे 40 हजार ई-रिक्शा का वितरण अब नगर निगम जोन के आधार पर नहीं होगा। इनका वितरण थानों के हिसाब से होगा। कांग्रेस सरकार के समय बनाए गए प्रस्ताव में इनका वितरण नगर निगम के 11 जोन के आधार पर किया जाना था, लेकिन भाजपा ने शहर में दो की जगह एक ही निगम करने की घोषणा कर दी, जिसके चलते अब इनका वितरण थानों के हिसाब से किया जाएगा। इनकी मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी भी संबंधित थाने की होगी। ट्रैफिक कंट्रोल बोर्ड की बैठक में मिले सुझावों के आधार पर अब आरटीओ ने नया प्रस्ताव तैयार किया है। इसे मंजूरी के लिए जिला कलेक्टर के पास भेजा जाएगा। मंजूरी मिलने के बाद ई-रिक्शा चालक अपनी मर्जी से किसी भी रूट पर संचालन नहीं कर सकेंगे। नए प्रस्ताव में इन्हें 6 जोन में बांटा जाएगा। इनमें से 5 जोन जयपुर पुलिस कमिश्नरेट के अधिकार क्षेत्र के हिसाब से बनाए गए हैं, जबकि 1 जोन जयपुर मेट्रो की सुविधा के हिसाब से बनाया गया है। हर ई-रिक्शा चालक की एक आईडी होगी। उसके संचालन के लिए कलर कोड होगा। इसके साथ ही वह ई-रिक्शा को दूसरे क्षेत्र में नहीं चला सकेंगे। ई-रिक्शा का डीसीपी जोन थाना सीमा के क्षेत्र के अनुसार होगा। उम्मीद है कि ई-रिक्शा के जोनवार

संचालन से यातायात व्यवस्था में सुधार होगा।

पूरे जयपुर शहर में ई-रिक्शा की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है, लेकिन चारदीवारी में बेलगाम ई-रिक्शा ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। ई-रिक्शा के कारण शहर में भीषण जाम लग रहा है और लोगों का चारदीवारी में पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। कई बार ट्रैफिक पुलिस ने ई-रिक्शा के खिलाफ कार्रवाई करने की कोशिश भी की है, लेकिन विवाद के कारण यह कार्रवाई लगातार नहीं हो पाई। अब संचालन के लिए क्षेत्र निर्धारित होने के बाद माना जा रहा है कि हर जगह ई-रिक्शा की भारी भीड़ नजर नहीं आएगी।

निम्न 6 जोन में 40 हजार ई-रिक्शा चलेंगे

- कमिश्नरेट के जयपुर उत्तर जोन में 8500 ई-रिक्शा चलेंगे, कलर कोड गुलाबी
- जयपुर पूर्व जोन में 7500 ई-रिक्शा चलेंगे, कलर कोड हरा
- जयपुर मध्य जोन में 7500 ई-रिक्शा चलेंगे, कलर कोड आसमानी नीला
- जयपुर दक्षिण जोन में 8500 ई-रिक्शा चलेंगे, कलर कोड केसरिया
- जयपुर पश्चिम जोन में 7500 ई-रिक्शा चलेंगे, कलर कोड हल्का पीला
- जयपुर मेट्रो जोन में 500 ई-रिक्शा चलेंगे, कलर कोड सफेद

पैसे की धोखाधड़ी से परेशान हीरो इलेक्ट्रिक के डीलर्स

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम। हीरो इलेक्ट्रिक इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर सेगमेंट में एक बड़ा नाम है, लेकिन पिछले 2 सालों से हालात ठीक नहीं चल रहे हैं। कंपनी की बिक्री तो बढ़ नहीं रही है, लेकिन डीलरों की ओर से भी कंपनी को और परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

इस बारे में बात करें तो हीरो इलेक्ट्रिक प्राइवेट लिमिटेड के कम से कम 200 डीलरों के सैकड़ों करोड़ रुपये के अपने बकाये की मांग को लेकर कंपनी के गुरुग्राम स्थित हेड ऑफिस पहुंचे हुए हैं। सभी डीलरों ने सर्वसम्मति से अपना अध्यक्ष निशांत बंसल को चुना है, जो कंपनी के एमडी नवीन मुंजाल से बात करेंगे।

इस पूरे मामले पर बात करते हुए निशांत बंसल ने कहा, ₹7 अगस्त की सुबह से ही कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के डीलर्स हीरो इलेक्ट्रिक के हेड ऑफिस पर एकत्रित हुए हैं। निशांत बंसल ने आगे कहा कि हमने आने से पहले नवीन मुंजाल को इस बारे में सूचित कर दिया था।

आपकी जानकारी के लिए बता दें कि हीरो इलेक्ट्रिक के देशभर में करीब 600 डीलर हैं। हमारे सभी डीलरों का करीब-करीब 500 करोड़ रुपये कंपनी के ऊपर बकाया है।"

हीरो इलेक्ट्रिक के ऑल इंडिया डीलर्स के अध्यक्ष निशांत बंसल ने बताया कि जब हम कोई स्कूटर बेचते हैं तो उस पर 3 साल की वारंटी होती है, लेकिन कंपनी ने पिछले 1 से 2 साल के बीच किसी भी स्कूटर के लिए वारंटी वाले स्पेयर पार्ट्स नहीं भेजी है। जिसकी वजह से हमारी एक से डेढ़ करोड़ की वारंटी भी फंस गई है। कंपनी ने हमसे स्कूटर के पैसे तो ले लिए, लेकिन कंपनी ने कई डीलर्स को स्कूटर्स भी नहीं भेजे। वहीं कई डीलर्स को बिना बैटरी और चार्जर के ही स्कूटर भेज दिए गए। इस तरह कंपनी ने सभी डीलर्स के 400 से 500 करोड़ रुपए रोक लिए हैं। हमारी सिक्योरिटी भी कंपनी के पास जमा है। 07 अगस्त को जब हमलोग यहां पहुंचे तो हमने कंपनी से अपना लेजर बैलेंस क्लियर करने को कहा, क्योंकि हमें स्टाफ की सैलरी, शोरूम का किराया जैसे कई खर्चे देने होते हैं। कई डीलर्स ने तो अपने परिवार के गहने और जमीन तक गिरवी रख कर डीलरशिप ली हुई है। इसके बाद भी हमें कंपनी की तरफ से कोई मदद नहीं मिली। हम में से कई डीलर्स पहले भी कंपनी में आकर अपनी रकम के बारे में बात कर चुके हैं, लेकिन कंपनी कहती है कि हमें 2 से 3 महीने का समय दीजिए। अब 2 से 3 महिनें का समय निकल गया, लेकिन अभी तक हमें न तो कंपनी की तरफ से पैसा मिला है और न ही कंपनी के किसी जिम्मेदार व्यक्ति ने अभी तक हमसे बात की है। कोई हमें बताता है कि नवीन मुंजाल जी दुबई में हैं, कोई कहता है कि वो लंदन में हैं। कुल मिलाकर वे हम सब से दूर भाग रहे हैं।

भारत की हाइब्रिड व्हीकल पॉलिसी का फायदा उठाएगी लेम्बोर्गिनी, बनाया फ्यूचर प्लान

परिवहन विशेष न्यूज

लेम्बोर्गिनी ने शुक्रवार को अपनी फ्लैगशिप एसयूवी Urus के प्लग-इन हाइब्रिड वर्जन को 4.57 करोड़ रुपये (एक्स-शोरूम) की शुरुआती कीमत पर लॉन्च किया है। उरुस एसई में एक ट्विन-टर्बो 4.0 वी8 है जिसे इलेक्ट्रिक पावरट्रेन के साथ तालमेल में काम करने के लिए फिर से इंजीनियर किया गया है। ये फोर-व्हील ड्राइव प्रीमियम एसयूवी ऑल-इलेक्ट्रिक मोड पर 60 किमी से अधिक की दूरी तय कर सकती है।

नई दिल्ली। इतालवी सुपर लग्जरी वाहन निर्माता Automobili Lamborghini भारत की नई हाइब्रिड वाहन नीति का इंतजार कर रही है, ताकि देश में अधिक विकास के अवसरों का लाभ उठाया जा सके। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को ये कहा।

Urus का प्लग-इन हाइब्रिड वर्जन लॉन्च

Lamborghini ने शुक्रवार को अपनी फ्लैगशिप एसयूवी Urus के प्लग-इन हाइब्रिड वर्जन को 4.57 करोड़ रुपये (एक्स-शोरूम) की शुरुआती कीमत पर लॉन्च किया है। ऑटोमोबिली लेम्बोर्गिनी एशिया प्रशांत क्षेत्र के निदेशक, फ्रांसेस्को स्कार्डोनी ने उरुस एसई के लॉन्च के मौके पर पीटीआई को बताया-

हमारा मानना है कि भारत में विकास की बड़ी संभावना है। हम पहले ही देख चुके हैं कि उरुस की शुरुआत के साथ ही हमने बड़ी प्रतिशत वृद्धि की है। हमारा मानना है कि अगले साल भी हम इसी तरह का रुझान देखेंगे।

कंपनी ने 2023 में रिकॉर्ड 103 यूनिट बेची थीं। 2022 में इसने पिछले वर्ष की तुलना में 33 प्रतिशत की वृद्धि के साथ रिकॉर्ड 92 यूनिट सेल की हैं। कंपनी के प्रोडक्ट रोडमैप को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि हम अपनी पूरी तरह से हाइब्रिडाइज्ड प्रोडक्ट लाइन पेश कर रहे हैं।

हाइब्रिड पॉलिसी पर क्या कहा?

स्कार्डोनी ने आगे कहा, "ऐसा इसलिए है क्योंकि हम जानते हैं कि (भारतीय) सरकार हाइब्रिड के लिए नई नीतियों पर काम कर रही है। हमें उम्मीद है कि हम अपनी कारों पर उन नीतियों का लाभ उठा सकते हैं। यह अभी भी प्रगति पर है। हमें विश्वास है कि यह लेम्बोर्गिनी जैसे ब्रांड के लिए आदर्श होगा और भारत में और भी अधिक विकास होगा।"

भारतीय बाजार को लेकर उत्साहित होते हुए उन्होंने कहा कि लेम्बोर्गिनी की वृद्धि यहां भारत में विकास से भी संबंधित है, जो दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। उरुस एसई में एक ट्विन-टर्बो 4.0 वी8 है, जिसे इलेक्ट्रिक पावरट्रेन के साथ तालमेल में काम करने के लिए फिर से इंजीनियर किया गया है। कंपनी ने कहा कि फोर-व्हील ड्राइव प्रीमियम एसयूवी ऑल-इलेक्ट्रिक मोड पर 60 किमी से अधिक की दूरी तय कर सकती है। कंपनी अगले साल तक भारत में वाहन की डिलीवरी शुरू कर देगी।

विधायक ने दिव्यांगों को 'खराब' ई-रिक्शा देने को लेकर कंपनी के अधिकारी को थप्पड़ जड़ा

परिवहन विशेष न्यूज

समाचार एजेंसी पीटीआई के अनुसार महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में महाराष्ट्र के विधायक और पूर्व मंत्री ओमप्रकाश उर्फ बच्चू कडू ने बृहस्पतिवार, 08 अगस्त को एक ई-रिक्शा निर्माण कंपनी के अधिकारी को कथित तौर पर विकलांग व्यक्तियों को खराब रिक्शे देने को लेकर थप्पड़ जड़ दिया। कडू अचलपुर से निर्दलीय विधायक हैं और प्रचार जनशक्ति पार्टी के प्रमुख हैं। वह राज्य में सत्तारूढ़ गठबंधन के साथ हैं। विधायक एक रैली को संबोधित करने के लिए यहां पहुंचे थे।

इस दौरान एक अतिथि गृह में कुछ दिव्यांगों ने उनसे मिलकर शिकायत की कि उन्हें सरकारी योजना के तहत खराब ई-रिक्शा उपलब्ध कराए गए हैं। रिक्शा बनाने वाली कंपनी का एक अधिकारी भी वहां मौजूद था। एक समाचार चैनल द्वारा प्रसारित वीडियो में बातचीत के दौरान कडू उस व्यक्ति को मारते हुए दिख रहे हैं।

एक वीडियो में बातचीत के दौरान कडू उस व्यक्ति को मारते हुए दिख रहे हैं। पीटीआई के संपर्क करने पर कडू ने एजेंसी से कहा, 'हां, मैंने सरकारी योजना के तहत दिव्यांग लोगों को ई-रिक्शा देने वाली कंपनी के एक अधिकारी को थप्पड़ मारा था। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी को आना था, लेकिन कंपनी ने एक ऐसे अधिकारी को भेज दिया, जिसे उत्पाद के बारे में कुछ भी नहीं पता था।' उन्होंने कहा कि मैंने खुद एक रिक्शा में सवारी की और पाया कि उसमें कुछ खराबी थी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि घटना के संबंध में अभी तक किसी ने पुलिस में शिकायत दर्ज नहीं कराई है। विधायक पर पहले भी सरकारी अधिकारियों पर कथित रूप से हमला करने का मामला दर्ज हो चुका है।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन बैटरी स्वैपिंग को बदलने के लिए एचपीसीएल ने मूविंग के साथ की साझेदारी

परिवहन विशेष न्यूज

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने भारत भर में 22,000 से अधिक एचपीसीएल रिटेल आउटलेट्स पर बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए मूविंग के साथ साझेदारी की है। यह रणनीतिक सहयोग देश में इलेक्ट्रिक वाहन के बुनियादी ढांचे में क्रांति लाएगा, जिससे ईवी उपयोगकर्ताओं को व्यापक सहायता मिलेगी।

मूविंग अगले साल के भीतर 500 से ज़्यादा स्वचालित बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित करेगी, जो पूरी तरह से स्वचालित, मानव-रहित तकनीक का लाभ उठाएगी। इस पहल का उद्देश्य ईवी मालिकों के लिए सुविधा और दक्षता बढ़ाना है, जो संभावित रूप से एक नया उद्योग मानक स्थापित करेगा। इस रोलआउट से पूरे देश में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को अपनाने में तेज़ी आने की उम्मीद है, क्योंकि इससे विश्वसनीय और सुलभ बैटरी स्वैपिंग समाधान मिलेंगे।

एचपीसीएल के रिटेल आउटलेट्स का व्यापक नेटवर्क और मोबिलिटी सेक्टर को डीकार्बोनाइज करने की इसकी प्रतिबद्धता इस साझेदारी को विशेष रूप से प्रभावशाली बनाती है। एचपीसीएल ने पहले ही भारत भर में 3,700 से अधिक ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए हैं, जो ईवी उपयोगकर्ताओं की रेंज की चिंता को दूर करते हैं। मूविंग के साथ सहयोग करके, एचपीसीएल अपनी ग्रीन मोबिलिटी सेवाओं का विस्तार करने के लिए तैयार है, जो ग्रीन इकोनॉमी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

लेक्ट्रिक्स ईवी और मूविंग के अध्यक्ष प्रीतेश तलवार ने भारत के ईवी परिदृश्य को बदलने में इस साझेदारी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मूविंग की अभिनव तकनीक को एचपीसीएल के विशाल नेटवर्क के साथ मिलाने से भारत में सबसे बड़े स्वचालित बैटरी स्वैपिंग नेटवर्क में से एक बन जाएगा। यह कदम ईवी पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर नवाचार को बढ़ावा देगा और नए रोजगार के अवसर पैदा करेगा, जिससे देश के टिकाऊ परिवहन में बदलाव को और बढ़ावा मिलेगा।

विद्यार्थी जीवन में शिक्षा और महत्वाकांक्षा का मूल्य

विजय गर्ग

एक शिक्षा, अपने अनुकूलनीय माप, लक्ष्य-उन्मुख उद्देश्यों और ज्ञान जागरूकता के साथ, छात्रों की बेहतरी के लिए सावधानीपूर्वक निगरानी और सफल कार्यान्वयन के लिए कर्मियों की आवश्यकता वाले नियमों और प्रतिबंधों का अपना सेट लाती है। शिक्षा हमेशा छात्रों को अपने करियर का नेतृत्व करने और जीवन में एक मूल्यवान स्थान प्राप्त करने के लिए ताकत, बुद्धिमान दिमाग और सक्रिय विचार देती है।

शिक्षा ज्ञान प्रदान करती है लेकिन कौशल और पेशेवर गुण एक सफल करियर बनाते हैं। पढ़ाई में कौशल का विकास जरूरी है और मेहनती व योग्य छात्र ही टिक पाता है। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि शिक्षा हमारे जीवन को सर्वोत्तम एवं उन्नतिशील दिशा की ओर ले जाती है। व्याख्यान और असाइनमेंट के बाद योग्यता परीक्षाएँ उच्च स्तर पर छात्रों के स्तर का मूल्यांकन करती हैं। शिक्षा के प्रारंभिक चरण से ही छात्रों के मन में सफलता और कार्य केनद्रित रहता है, तभी तो वे शिक्षा के क्षेत्र में इतनी गहरी रुचि लेते हैं कि अपना परिणाम प्राप्त कर सकें और केवल योग्यता के आधार पर ही टिके रहना चाहते हैं। महत्वाकांक्षा, उद्देश्य और लक्ष्यों की उपलब्धता ने शिक्षा की एकाग्रता को निर्धारित किया और करियर बनाने के लिए व्यक्ति को उसी माहौल में रहना होगा। यह अनुमान लगाया गया है कि शिक्षा और स्वीकृति दो सिक्कों के समान पहलू हैं जो छात्र के करियर को आगे बढ़ाते हैं और उसे अपने जीवन में आत्मविश्वासी, दृढ़निश्चयी, स्वतंत्र और सुशिक्षित बनाते हैं। कभी-कभी, छात्रों को अपनी शिक्षा की स्थिति के प्रावधानों को पूरा करने के लिए कुशल पेशेवरों और ज्ञान सामग्री की कमी का सामना करना पड़ता है जिससे उन्हें निराशा महसूस होती है। लेकिन, ऐसा शुरुआती दौर में देखने को मिला था, अब नहीं। क्योंकि अब वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था के सभी मापदंड और तरीके बदल दिए गए हैं। एक शिक्षा, अपने अनुकूलनीय माप, लक्ष्य-उन्मुख उद्देश्यों और ज्ञान जागरूकता के साथ, छात्रों की बेहतरी के लिए सावधानीपूर्वक निगरानी और सफल कार्यान्वयन के लिए कर्मियों की आवश्यकता वाले नियमों और प्रतिबंधों का अपना सेट लाती है। शिक्षा हमेशा छात्रों को अपने करियर का नेतृत्व करने और जीवन में एक मूल्यवान स्थान प्राप्त करने के लिए ताकत, बुद्धिमान दिमाग और सक्रिय विचार देती है। महत्वाकांक्षा मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है और यह हमारे जीवन में उन्नतिशील दिशाओं के साथ एक नया सार भी प्रदान करती है। हम सभी के जीवन में एक महत्वाकांक्षा का होना जरूरी है, ताकि हम सार्थक तरीके से जी सकें। जीवन में अच्छे से जीने के लिए महत्वाकांक्षा हर किसी के लिए आवश्यक है।

महत्वाकांक्षा के बिना, दुनिया में जीवन उबाऊ, नीरस और अरुचिकर होगा। अतः, विश्व जीवन में अस्तित्व, भरण-पोषण और सफलता के लिए महत्वाकांक्षा एक आवश्यकता है। यह वास्तव में देखा गया है कि महत्वाकांक्षा हम सभी में सर्वश्रेष्ठ लाती है और हमारे लक्ष्यों में सफलता प्राप्त करने में भी मदद करती है। महत्वाकांक्षा हमें जीवन में पूर्णता प्राप्त करने में मदद करती है। इसलिए जीवन में करियर बनाने के लिए किस प्रकार की महत्वाकांक्षा आवश्यक है इस पर सटीक ढंग से विचार करना होगा और अपने सभी प्रयासों को क्रियान्वित करना होगा। महत्वाकांक्षा जीवन में प्रेरक शक्ति है जो दुनिया में महान उपलब्धियों को संभव बनाती है। यहां जीवन जीना ही काफी नहीं है, किसी के जीवन को दिलचस्प बनाने या दिलचस्प चीजों, योग्य चीजों, सर्वोत्तम चीजों और महान चीजों को दुनिया के सामने लाने के लिए कुछ हासिल करना होगा। शिक्षा हमेशा छात्रों के करियर को आकार देने का बुनियादी साधन रही है। करियर विकसित करने के लिए आप जो सबसे महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं उनमें से एक है कुछ प्रशिक्षण और शिक्षा लेना। आप अपने मौजूदा कौशल में सुधार कर सकते हैं या नए कौशल का निर्माण कर सकते हैं-अपने पेशेवर जीवन के विशेषज्ञ बन सकते हैं। अपने आदर्श लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए अपने कौशल का निर्माण करना महत्वपूर्ण है। क्योंकि आख़िरकार, आपको अपनी नौकरी इस तथ्य के कारण नहीं मिली है कि आपके पास कुछ कौशल या अनुभव की कमी है। नई संस्कृति, नए क्षेत्र, नई चुनौतियों का अनुभव करने और अपने दिमाग को समग्रता के लिए खोलने के बारे में सीखने और शिक्षा और ज्ञान से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है।नया संसार। सही करियर पथ चुनना विकल्पों का मार्ग है, किसी के करियर पथ के बारे में निर्णय लेने से पहले हमेशा उन पाठ्यक्रमों के बारे में बेहतर जानकारी होती है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पेश किए जा रहे हैं। भौतिक विकास, बौद्धिक विकास और आध्यात्मिक विकास की महत्वाकांक्षा रखने वाले व्यक्ति होते हैं। इसलिए, सर्वांगीण विकास की महत्वाकांक्षा किसी को

सकारात्मक गुणों वाला पूर्ण मानव बना सकती है, जो मानव संस्कृति का लक्ष्य है और दुनिया की भलाई के लिए आवश्यक है। हम सभी के लिए यह जानना भी आवश्यक है कि जो महत्वाकांक्षा एकपक्षीय, स्वार्थ अथवा कल्पना पर आधारित हो वह विश्व में मानव समाज के लिए असामान्य, अप्राकृतिक एवं अवांछनीय है। इसलिए महत्वाकांक्षा आवश्यक है, लेकिन अच्छी महत्वाकांक्षा ही जीवन में संतुष्टि, शांति और खुशी दे सकती है। यह केवल माना जाता है कि न केवल व्यक्तियों के लिए बल्कि राष्ट्रों के लिए भी स्वस्थ मानवीय महत्वाकांक्षा नितांत आवश्यक है ताकि दुनिया में हर किसी के लिए वास्तविक शांति, समृद्धि और प्रगति हासिल की जा सके। इसलिए, इतने व्यापक विचार को क्रियान्वित करने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचारों को केवल अपने स्वयं तक सीमित रखने के बजाय भविष्य की दुनिया की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए कुछ यथार्थवादी और अच्छी महत्वाकांक्षा रखनी चाहिए। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के ज्ञान, कौशल और चरित्र का विकास करना है। किसी व्यक्ति के मन में ज्ञान तब उत्पन्न होता है जब वह व्यक्ति किसी विचार या अनुभव से संपर्क करता है। शिक्षा का अर्थ विद्यार्थी के भीतर जो पहले से मौजूद है उसे बाहर निकालना है। खैर, यह शिक्षकों का कर्तव्य और जिम्मेदारी है कि वे छात्रों को उनके जीवन में सर्वोत्तम स्थान हासिल करने और उनके करियर के साथ-साथ शानदार प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करें। शिक्षा का केंद्रीय कार्य और अर्थ छात्रों में इच्छा-शक्ति का निर्माण करना और सीखने के लिए सर्वोत्तम सुविधाएं प्रदान करना है ताकि कोई भी आसानी से अपने जीवन का सही अर्थ पा सके। प्रत्येक अच्छी और उपयोगी शिक्षा के प्रयास का सर्वोत्तम संभव तरीके से उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे छात्रों को अपने सीखने के स्तर को बढ़ाने में मदद मिल सके और साथ ही उनके करियर में एक चमकदार चिंगारी बन सके। शिक्षा का उद्देश्य एक छात्र को यह सिखाना है कि वह अपना जीवन सबसे अधिक संचालित और नियंत्रित तरीके से कैसे जीये। और उसके दिमाग को विकसित करके और उसे वास्तविकता से निपटने के लिए प्रोत्साहित करके भी। छात्रों को शिक्षा के सम्मान माध्यम से अच्छे तरीके से समझना, अमल करना और खुद को साबित करना सिखाया जाना चाहिए। अनुभव, ज्ञान और दूरदर्शिता पर आधारित उचित महत्वाकांक्षा के साथ, कोई भी व्यक्ति दुनिया में जीवन की कठिनाइयों को दूर कर सकता है। यह एक वास्तविक तथ्य है कि अनुभव, पढ़ने और अवलोकन से हमें ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे-जैसे समय बीतता है, अनुभव, ज्ञान और दृढ़ विश्वास हमें एक सक्रिय दिमाग, मजबूत दृष्टिकोण, ज्ञान, आत्मविश्वास, इच्छा-शक्ति प्रदान करते हैं, जो मामलों के बारे में निर्णय लेने के लिए आवश्यक है। तब किसी की महत्वाकांक्षा उस मिशन को पूरा करने या दुनिया में उसे हासिल करने की होगी, जो जीवन में हर चीज को दिलचस्प बना देगी और उसे उसकी योजना के अनुसार सभी मामलों को पूरी सफलता के साथ हासिल कर देगी। दुनिया में हर किसी को इसी तरह रहना है और कला, साहित्य, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि, राजनीति आदि जैसे किसी क्षेत्र में अपनी पूरी क्षमता के अनुसार कुछ उल्लेखनीय हासिल करना है, न केवल वर्तमान दुनिया के लिए बल्कि मानव जाति के भविष्य के लिए भी।. और हम सभी के लिए अपने जीवन को अर्थ देना महत्वपूर्ण है, ताकि हम अपने लक्ष्य, उद्देश्य प्राप्त कर सकेंसर्वोत्तम संभव तरीके से महत्वाकांक्षाएं। वास्तव में, उन्हें आवश्यक ज्ञान दिया जाना चाहिए ताकि उन्हें जीवन में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने प्रयासों को आगे बढ़ाने में मदद मिल सके। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हमारे दिमाग को बेहतर बनाना है ताकि हम दूसरों के विचारों का अनुसरण करने के बजाय अपनी सोच को ऊपर उठा सकें। खैर, सभी छात्रों को यह मानना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य शिक्षण विधियों, व्यवहार और कार्यान्वयन के दिल और दिमाग में निहित है। छात्रों के अपने मूल्यों और अनुभवों से उपजे विश्वास ही उनके करियर और जीवन में हमेशा सबसे पहले आते हैं। खैर, यह एक सच्चा तथ्य है कि स्कूल से वास्तविक दुनिया में ज्ञान का स्थानांतरण कुछ ऐसा है जो शिक्षा के चरम कार्य के रूप में उस ज्ञान को प्राप्त करने के परिणामस्वरूप स्वाभाविक रूप से होता है। यह एक अच्छी तरह से परिभाषित और सटीक कथन है कि शिक्षा की भाषा सुनने से सीखने वाले की बजाय ज्ञान और शिक्षण पर पूरा ध्यान केंद्रित हो जाता है। इसलिए, छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे छात्रों की जरूरतों को पूरा करने वाले स्कूलों के बजाय स्कूलों के अनुरूप बनें। इसलिए, सभी शिक्षकों-शिक्षकों-प्रोफेसरों और मार्गदर्शकों को वर्तमान ज्ञान के आलोक में अपने विश्वासों को पहचानने और पुनः परीक्षण करने की चुनौती दी जानी चाहिए जो छात्रों को सरल, उपयोगी और आसान तरीके से मदद कर सकते हैं। जैसे हम अपनी महत्वाकांक्षा बनाते हैं और अपने सभी प्रयासों को क्रियान्वित करते हैं ताकि हम आसानी से अपने काम से सभी को खुश कर सकें और जीवन में अपनी वास्तविक मंजिल हासिल कर सकें। यह हम सभी के लिए एक दैनिक साहसिक कार्य बन जाता है, क्योंकि हमें नियमित परिस्थितियाँ मिलती हैं जो जीवन और किसी के चरित्र के बारे में गहरी और वास्तविक सीख दे सकती हैं। हम अपने काम में, अपने व्यक्तिगत जीवन में और दूसरों के जीवन में भी ईश्वर की महिमा, शक्ति और बुद्धि को देखते हैं। जैसे-जैसे हम उस चीज़ की खोज करना सीखते हैं जो हमें पसंद है, बल्कि जो सही है उसकी तलाश करना सीखते हैं। इसलिए, हम हमेशा उस चीज़ की शांति और आनंद में प्रवेश करते हैं जो अच्छा, आसान, वास्तविक और सुखदायक है। हमारे दैनिक जीवन में हमारी ज़िम्मेदारियाँ और भागीदारी इतनी अधिक उत्साहित हो जाती है कि हम अपने काम का आनंद लेना शुरू कर देते हैं, अपने प्रयासों पर विश्वास करते हैं और अपनी सकारात्मक सोच जारी रखते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

राय

शिक्षा प्रणाली: तब और अब

विजय गर्ग

अब शिक्षा हर समूह के लिए 'तथाकथित' हो गई है क्योंकि इसकी शिक्षाएँ छात्रों और अभिभावकों सहित शिक्षक दैनिक गतिविधियों में शामिल नहीं करना चाहते हैं। शिक्षा व्यवस्था स्वयं बर्बादी की राह पर है। शिक्षा परिप्रेक्ष्य-शिक्षा के बहुत सारे अलग-अलग अर्थ हैं जो हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होते हैं लेकिन मेरे अनुसार, यह जादू की तरह है जो मानव व्यक्तित्व और उनके सोचने के तरीके को पूरी तरह से बदल देता है। लेकिन यह काले जादू की तरह काम कर रहा है क्योंकि छात्र, शिक्षक और सिस्टम स्वयं इस शक्तिशाली शब्द ₹शिक्षा₹ का वास्तविक अर्थ गलत समझ रहे हैं। शिक्षा का लाभ- जिस प्रकार एक घर बनाने के लिए ईंटों और सीमेंट की आवश्यकता होती है उसी प्रकार एक शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे सिस्टम की नींव के लिए जिम्मेदार हैं। शिक्षक ही हैं जिनके कारण हमारे पास डॉक्टर, इंजीनियर, पुलिसकर्मी हैं और वे ही हैं जो समाज को जीवन जीने की कला बताते हैं। जैसे सुनार सोने को चमक प्राप्त करने और उसमें चमक लाने के लिए उच्च तापमान पर प्रज्वलित करता है, वैसा ही संबंध गुरु और शिष्य के बीच होता है। शिक्षक-छात्रों की आज की स्थिति- लेकिन आज का ₹गुरु₹ शिक्षक बन गया और ₹शिष्य₹ छात्र बन गया। दोनों का रिश्ता अब बदल गया है. शिक्षकों ने इसे व्यावसायिक कार्य के रूप में लिया और छात्रों ने इसे आपत्तिजनक मामले के रूप में लिया। अतीत को रोशन करना- प्राचीन काल में पीछे जाने पर पता चलता है कि दोनों के बीच का रिश्ता अनुशासन, सच्चाई और नैतिकता से भरा हुआ था। जैसे हम दूध को हिलाकर मक्खन निकालने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है, वैसे ही गुरु अपने शिष्य को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए काम करते हैं ताकि युवा पीढ़ी परंपरा को समझ सके और उस उच्च स्तर तक प्रदर्शन कर सके। उस समय गुरु ने अपने शिष्यों को भोजन देने से लेकर रहने की जगह देने तक का ख्याल रखा। वर्तमान में क्या हो रहा है- आज की स्थिति बिल्कुल विपरीत है क्योंकि शिक्षा देने का माध्यम स्वार्थी हो गया है। वे अपने छात्रों को अपने बेटे की तरह नहीं मानते। उन्होंने इसे पैसा कमाने का जरिया बना लिया. शिक्षकों की रणनीतियाँ- आजकल शिक्षकों ने प्रचार के लिए जो रणनीति अपनाई है, वह यह है कि उन्होंने अपने छात्रों को परीक्षा के पेपर लीक करना शुरू कर दिया है, उन्हें केवल चुनिंदा प्रश्न दिए जाते हैं, जिससे छात्रों का दिमाग खराब हो रहा है और इसका मुख्य परिणाम यह है कि वे प्रतियोगी परीक्षा पास करने में असमर्थ हैं, जहां हर कोई सब कुछ अज्ञात है. छात्र तब और अब- केवल एक समूह को दोष देना उचित नहीं है; छात्रों की भी बराबर की भागीदारी है। वे भूल जाते हैं कि उन्हें अपने शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। पीछे जाकर स्थितियों का अवलोकन करें तो शिष्य अपने गुरु को अपने पिता के समान मानते हैं और उनका आदर करते हैं। प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली- प्राचीन काल में दी जाने वाली शिक्षा से आधुनिक शिक्षा प्रणाली में काफी बदलाव आया है। कई वर्षों पहले छात्रों को वेद, विज्ञान और गणित सीखना सिखाया जाता था। शिक्षकों को अपने छात्रों से कोई शुल्क लेने की अनुमति नहीं थी, यदि ऐसा करना पाप माना जाता था। शिक्षा देने का माध्यम मौखिक था। छात्र पढ़ाई के लिए पूरी तरह से अपने शिक्षकों पर निर्भर थे। प्राचीन काल अध्ययन के नियम- उस समय अनेक अनुष्ठान करके तथा अपना घर छोड़कर शिक्षा आरंभ करने के लिए विद्यार्थी की आयु 5 वर्ष होती थी। छात्र अपने शिक्षकों को सम्मान देते थे और शिक्षकों से ऊंची सीटें नहीं लेते थे।

अर्थव्यवस्था में पिछड़ती ग्रामीण महिलाएं

विजय गर्ग

राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत की आबादी का लगभग आधा हिस्सा (करीब 48 फीसद) होने के बावजूद महिलाएं सकल घरेलू उत्पाद केवल 18 फीसद का योगदान देती हैं इस अंतर को ग्रामीण महिलाओं के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसमें सांस्कृतिक बाधाएं, सीमित अवसर, शिक्षा की कमी और ऋण तक सीमित पहुंच शामिल है। एक रपट के अनुसार इस लैंगिक अंतर को पाटने 2025 तक भारत की जीडीपी में 18 फीसद की वृद्धि हो सकती है। यह एक सक्षम वातावरण बनाने की जरूरत को रेखांकित करता है। उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन जैसी पहलों से इस अंतर को पाटने और ग्रामीण महिलाओं के लिए आजीविका के अवसरों का विस्तार किया जाना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन भी ग्रामीण महिलाओं को प्रभावित कर रहा है। असल में ग्रामीण महिलाएं अक्सर दुनिया के गरीब तबकों में होती हैं और अपनी रोजी- रोटी के लिए स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों पर ज्यादा निर्भर रहती हैं। इस परिवर्तन से पेयजल, भोजन और ईंधन की सुरक्षा पर असर पड़ता है, जिनके लिए महिलाएं भी जिम्मेदार होती हैं। सुखे और बारिश में अनियमितता की वजह महिलाओं को पानी और ईंधन इकट्ठा करने में अधिक समय लगाना पड़ता है। इससे फसलों और पशुओं की सेहत पर भी असर पड़ता है, जिससे महिलाओं को कम भोजन के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। सामाजिक संरचनाओं, भेदभावपूर्ण मानदंडों और शिथिल संस्थाओं की वजह से से महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक घरेलू काम और बच्चों की देखभाल का बोझ उठाना पड़ता है। इससे उनकी पढ़ाई और नौकरी पाने के अवसर सीमित हो जाते हैं।

जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के लिए ग्रामीण महिलाओं को नेतृत्व दिया जा सकता है। उनका कौशल और क्षमता विकास किया जा सकती है। जेंडर- र-केंद्रित सार्वजनिक नीतियां बनाई जा सकती हैं। पिछले एक दशक में ग्रामीण महिलाओं के लिए आजीविका कार्यक्रमों ने उनके उनके समुदायों असाधारण योगदान दिया है। ग्रामीण महिलाओं के अथक प्रयासों को मान्यता देना दूसरों को प्रेरित करता है। इससे अधिक टिकाऊ आजीविका वाले भविष्य की दिशा में बहुत जरूरी बदलाव होता है। हालांकि सरकार अपने स्तर पर प्रयास कर रही हैं, लेकिन आम आदमी के सामाजिक सरोकारों के बिना लक्ष्यों तक पहुंच पाना आसान नहीं है।

₹महिलाओं को अधिक समतापूर्ण समाज के लिए सशक्त बनाने के अलावा उनकी आजीविका पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर भी विचार होना चाहिए। अप्रत्याशित मौसम की घटनाएं, बढ़ता तापमान और बारिश के बदलते पैटर्न तेजी से परिदृश्य को बदल रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की ओर संकेत करते हैं। 'सीओपी 28' सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। उसमें कहा गया है कि आजीविका पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को देखने के लिए ग्रामीण भारत की ओर रुख करना होगा। महाराष्ट्र में आजीविका कार्यक्रमों पर चर्चा हो रही है और वहां बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इसी तरह अन्य राज्यों में भी आजीविका कार्यक्रमों के अप्रत्याशित परिणाम देखने को मिल रहे हैं। हालांकि अब भी प्रयासों में और तेजी लाने की दरकार है, जिसके लिए

कदम उठाने होंगे। इस तरह के कार्यक्रमों से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि यह लड़ाई है बदलती जलवायु के सामने महिलाओं की आजीविका बनाए रखने की। यह कहीं अधिक कठिन चुनौती भरा काम है। खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) की एक रपट के मुताबिक महिला प्रधान ग्रामीण परिवार जलवायु परिवर्तन के झटकों से असामान्य रूप से प्रभावित होते हैं। एक डिग्री तापमान बढ़ने का अर्थ है पुरुष प्रधान परिवारों की तुलना में उनकी आय में 34 फीसद की भारी गिरावट इससे एक महत्त्वपूर्ण सवाल है कि इस वैश्विक परिवर्तन को देखते हुए राष्ट्रीय जलवायु योजनाओं में अक्सर इन सबसे अधिक जोखिम वाले समुदायों का समर्थन करने के लिए ठोस कार्रवाई की कमी क्यों होती हैं? जलवायु परिवर्तन नीति निर्माण में महिलाओं का अक्सर कम प्रतिनिधित्व क्यों होता है?

एफएओ की रपट के मुताबिक ग्रामीण लोगों पर जलवायु परिवर्तन के असमान प्रभावों का समाधान करने में विफलता संपन्न और निर्धन लोगों तथा पुरुषों और महिलाओं के बीच पहले से मौजूद बड़े अंतर को और अधिक बढ़ा देगी। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में ग्रामीण तथा महिला- प्रधान परिवारों को आपदा आने पर पुरुषों की तुलना में पहले से ही अधिक वित्तीय बोझ का सामना करना पड़ता है। अगर वेतन में इन महत्त्वपूर्ण मौजूदा अंतरों को दूर नहीं किया गया, तो यह अंतर और अधिक बढ़ जाएगा। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि वर्तमान वैश्विक तापमान सन 1800 के अंत की तुलना है। में कुल मिलाकर लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस अधिक है, जिसके कारण बाढ़, तूफान और गर्म लहरों जैसे विनाशकारी मौसम में लगातार वृद्धि हो रही है। एफएओ ने कहा कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील हैं, क्योंकि सामाजिक संरचनाएं तथा भेदभावपूर्ण मानदंड बहुत गहरे जड़ें जमा चुके हैं। इनसे लड़ पाना आसान नहीं है।

असल में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों की संसाधनों, सेवाओं और नौकरियों तक पहुंच सीमित है, जिससे उनके लिए जलवायु परिवर्तन का सामना करना कठिन हो सकता है। औसतन, गर्मी के कारण वे धनी परिवारों की तुलना पांच फीसद अधिक आय खो देते तथा बाढ़ के कारण चार फीसद से अधिक आमदनी गवां देते हैं। महिलाओं द्वारा संचालित घरों पर तो और अधिक बुरा असर पड़ता है। पुरुषों द्वारा संचालित परिवारों की तुलना में अत्यधिक गर्मी के कारण उनकी आय में लगभग आठ फीसद अधिक तथा बाढ़ के कारण तीन फीसद अधिक नुकसान होता है। यह रपट यह सोचने को मजबूर करती है कि आखिर हम जलवायु परिवर्तन से ग्रामीण महिलाओं की सुरक्षा किस तरह कर सकते हैं? बड़ा सवाल यह भी है कि आखिर क्या हम सुरक्षा कर भी पाएंगे या नहीं? अगर नहीं कर पाए तो इन महिलाओं का भविष्य क्या होगा? इनमें से हर हितधारक को अपने-अपने क्षेत्रों में नेतृत्व करना चाहिए और महिलाओं की जरूरतों और अनुभवों के प्रति संवेदनशील प्रयासों के माध्यम से साझीदारी बनाने और सहयोग बढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में काम करना चाहिए। उनकी क्षमताओं और संभावनाओं के अनुरूप काम करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों के बीच अधिक संपर्क आवश्यक है, लेकिन साथ ही यह पहचानना भी महत्त्वपूर्ण कि महिलाओं मात्र उपस्थिति इस बात की गारंटी नहीं है अनुभव और नेतृत्व को जलवायु परिवर्तन नीतियों में एकीकृत किया जाएगा। जलवायु परिवर्तन से संबंधित निर्णय लेने के उच्चतम स्तरों पर महिलाओं का अधिक समावेश आवश्यक है। उनको राष्ट्रीय और ग्रामीण स्तर पर भी नेतृत्व करने में सक्षम होना चाहिए। ग्रामीण महिलाओं के दृष्टिकोण और पहल को भी शहरी महिलाओं की तरह सामने लाने की दरकार है।

अपने बच्चे की शब्दावली कैसे बनाएं : विजय गर्ग

0 से 8 वर्ष के बच्चों के पास एक मजबूत शब्दावली होनी चाहिए क्योंकि यह उनकी पढ़ने की क्षमताओं में काफी सुधार कर सकती है और उनके समग्र विकास में योगदान कर सकती है। बच्चे इन प्रारंभिक वर्षों में स्पंज की तरह आश्चर्यजनक दर से नए शब्द और विचार सीखते हैं। एक बड़ी शब्दावली बेहतर संचार क्षमताओं को बढ़ावा देने के अलावा शैक्षणिक प्रदर्शन और संज्ञानात्मक विकास दोनों के लिए आधार प्रदान करती है। माता-पिता और शिक्षक बच्चों को जटिल अवधारणाओं को समझने, खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने और एक समृद्ध भाषा वातावरण बनाकर सीखने के प्रति आजीवन प्रेम पैदा करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान कर सकते हैं। आइए छोटे बच्चों की शब्दावली वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक तरीकों की जांच करें ताकि वे भविष्य में स्कूली शिक्षा की मांगों को संभालने के लिए तैयार हो सकें।

1.बातचीत:

एक मूलभूत रणनीति अपने बच्चे के साथ आकर्षक बातचीत करना है। अपने बच्चे से बार-बार और वर्णनात्मक ढंग से बात करने से उनकी शब्दावली में नए शब्द जुड़ते हैं और एक समृद्ध भाषाई वातावरण को बढ़ावा मिलता है। मिनेसोटा विश्वविद्यालय के शोध से पता चलता है कि जिन बच्चों की माताएं उनसे अक्सर बात करती हैं वे दो साल की उम्र तक उन बच्चों की तुलना में लगभग 300 अधिक शब्द सीख लेते हैं जिनकी माताएं उनसे कम बात करती हैं।

2. बच्चों की बातचीत के बजाय वास्तविक शब्दों का उपयोग करें: जबकि कुत्ते के लिए ₹बो-बो₹ या भोजन के लिए ₹यम-यम₹ जैसे शब्द प्यारे लग सकते हैं, सही शब्दों का उपयोग करने से बच्चों को उन वास्तविक शब्दों को सीखने में मदद मिलती है जिनकी उन्हें ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त, बच्चों को कई भाषाओं से परिचित कराना फायदेमंद हो सकता है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अध्ययन से पता चलता है कि प्रारंभिक द्विभाषावाद महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक लाभ प्रदान करता है।

3. बड़े शब्दों का उपयोग करने से न डरें: संपूर्ण मस्तिष्क विकास विशेषज्ञ, पेरेंटिंग कोच, ग्रेस रियास के अनुसार, "अपने बच्चे की शब्दावली में बड़े शब्दों का परिचय देना डराने वाला नहीं होना चाहिए। यदि बच्चे अपने परिवेश में इन शब्दों का बार-बार उपयोग करें तो वे जटिल शब्द सीख सकते हैं। एक बच्चे के लिए ₹बिल्लीर₹ जैसे सरल शब्द सीखने के लिए आवश्यक प्रयास

4. घर के आसपास चीजों को लेबल करें: यह दृश्य जुड़ाव बच्चों को वस्तुओं के नाम सीखने में मदद करता है और उनकी प्रिंट जागरूकता को बढ़ाता है, जिससे उन्हें पढ़ने में सफलता के लिए तैयार किया जाता है। बार-बार ज़ोर से पढ़कर इसे पूरा करें। किताबों में रोजमर्रा की बातचीत या टीवी शो की तुलना में 50% अधिक शब्द होते हैं, जो शब्दावली का एक समृद्ध स्रोत प्रदान करते हैं। एक दिन में पांच किताबें पढ़ने से बच्चों को किंडरगार्टन द्वारा लगभग 1.4 मिलियन अधिक शब्द सीखने को मिल सकते हैं।

5. शब्दों को मनोरंजक और सुलभ बनाएं: शब्दकोश का उपयोग करना, नॉन-फिक्शन की खोज करना, एक शब्द दीवार बनाना और शब्द कार्ड का उपयोग करना अन्य व्यावहारिक रणनीतियाँ हैं। अपने बच्चे को मूर्खतापूर्ण वाक्य बनाने और स्क्रैबल या ज़िंगो जैसे शब्द गेम खेलने में व्यस्त रखें! सीखने को मनोरंजक बनाने के लिए वर्ड बिल्डर। अपने बच्चे को संदर्भ में नए शब्दों का उपयोग करने, उनके भाषा कौशल और रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करने के लिए कहानी कहने को प्रोत्साहित करें।

अपने बच्चे की शब्दावली का निर्माण करना केवल नए शब्द सीखने के बारे में नहीं है; यह एक भाषा-समृद्ध वातावरण बनाने के बारे में है जो जिज्ञासा, आत्मविश्वास और सीखने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देता है। शब्दावली निर्माण को अपने बच्चे की दिनचर्या का आनंददायक और अभिन्न अंग बनाएं।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

नकदी का पहाड़ बना चुके हैं वॉरेन बफे, क्या दुनिया को डरना चाहिए?

परिवहन विशेष न्यूज

दुनियाभर के निवेशक वॉरेन बफे के कैश बढ़ाने को अपशगुन के तौर पर लेने लगे हैं कि अब शेयर मार्केट में गिरावट होगी। जापान के ब्याज और कैरी ट्रेड वाले मसले के चलते दुनियाभर के मार्केट क्रैश भी हुए। इससे अपशगुन वाली आशंका को और भी बल मिला कि बफे को इन हालात का अंदेशा पहले से ही था। लेकिन क्या वाकई में ऐसा है?

नई दिल्ली। अमेरिकी अरबपति और करिश्माई निवेशक वॉरेन बफे (Warren Buffett) की हर गतिविधि पर दुनियाभर के हर इन्वेस्टर की नजर रहती है। वह बतौर बॉस बर्कशायर हैथवे को 6 दशक से चला रहे हैं। उन्होंने बेशुमार दौलत बनाई और दुनियाभर के निवेशकों के लिए प्रेरणास्रोत बने। उनके इन्वेस्टमेंट फॉर्मूले की नकल करके भी लोगों करोड़ों रुपये छापे।

इतना प्रभावशाली शख्स जब भी कुछ करता है, तो उससे दुनियाभर के निवेशकों के मन में सवाली कीड़ा कुलबुलाने लगता है। उन्हें लगता है कि बफे ऐसा क्यों कर रहे हैं और उनके पोर्टफोलियो उसका क्या असर होता है। जैसा कि बफे के नकदी का भंडार बढ़ाने के मामले में हुआ। इससे दुनियाभर के छोटे-बड़े निवेशकों के बीच हलचल मच गई।

ऐसे में सवाल उठता है कि क्या सच में बफे कुछ ऐसा जानते हैं, जो बाकी दुनिया को नहीं पता। या फिर उनका नकदी का भंडार एक सामान्य प्रक्रिया है। आइए इसका जवाब जानने की कोशिश करते हैं।

नकदी का भंडार क्यों बढ़ा रहे बफे

वॉरेन बफे की कंपनी बर्कशायर हैथवे इंक (Berkshire Hathaway Inc) ने आईफोन बनाने वाली एपल (Apple) में अपनी होल्डिंग करीब 50 फीसदी तक कम कर ली। उन्होंने पिछली तिमाही में कई कंपनियों में हिस्सेदारी घटाने और अपना कैश भंडार बढ़ाने पर फोकस किया। इस भारी बिकवाली की बदौलत बफे के पास मौजूद कैश भंडार 276.9 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है।

इसके बाद अमेरिका में रोजगार के निराशाजनक आंकड़े आए और मंदी की आशंका जताई जाने लगी। इससे निवेशकों को लगा कि बफे ने मंदी की आशंका को भांप लिया था। इसलिए उन्होंने प्रॉफिट बुक किया और अपना कैश भंडार बढ़ा लिया। उनका प्लान होगा कि जब मार्केट गिरेगा, तो उन्हें सस्ते में शेयर मिलेंगे और वे दोबारा निवेश करके अच्छा मुनाफा कमा सकेंगे।

बफे का कैश भंडार बढ़ाना अपशगुन?

दुनियाभर के निवेशक बफे के कैश बढ़ाने को अपशगुन के तौर पर लेने लगे कि अब मार्केट में गिरावट होगी। जापान के ब्याज और कैरी ट्रेड वाले मसले के चलते दुनियाभर के मार्केट क्रैश भी हुए। इससे अपशगुन वाली आशंका को और भी बल मिला कि बफे को इन हालात का अंदेशा पहले से ही था।

बफे ने 2005 के आसपास भी नकदी का बड़ा भंडार बनाया। इससे उन्हें सब-प्राइम क्राइसिस के तौर पर सस्ते में शानदार शेयर खरीदने का मौका मिला, जब अन्य निवेशकों की बैलेंस शीट में गिरावट आई थी।

क्या बफे अर्थव्यवस्था के नजूमी हैं?

इसमें कोई शक नहीं कि बफे अर्थव्यवस्था के बड़े जानकार हैं। लेकिन, शायद उतने भी नहीं, जितना निवेशक उन्हें आंकते हैं। बतौर निवेशक बफे की कामयाबी की वजह भविष्य को आंकने की उनकी क्षमता नहीं है। एंड्रिया फ्रैजिनी, डेविड कैबिलर और लासे पेडरसन ने 2018 में प्रकाशित शोध में पाया कि बफे बस निवेश के बेसिक मॉडल को फॉलो किया। उन्होंने अपेक्षाकृत सस्ते दामों पर उच्च गुणवत्ता वाले स्टॉक खरीदे हैं। यह कोई कामयाबी का कोई जादुई या अलौकिक तरीका नहीं है।

यह काम कोई भी कामयाब निवेशक कर सकता है। बफे के साथ बस अच्छी बात यह हुई कि उन्हें बर्कशायर हैथवे के बीमा व्यवसाय के जरिए सस्ते में बड़ी पूंजी मिली, जिसका उन्होंने अच्छे तरीके से इस्तेमाल किया। इसका मतलब साफ है कि बफे कोई जादुई शख्सियत नहीं। उनकी कामयाबी की वजह उनका तेज दिमाग है और कैश भंडार की वजह भी यही है।

बफे ने क्यों बढ़ाया नकदी भंडार

बफे ने मई में शेयरधारकों की मीटिंग में कहा था कि वह सिर्फ दो कारणों से शेयर बेचते और रिजर्व बढ़ाते हैं। पहला यह कि उन्हें कैपिटल गेन पर टैक्स बढ़ने का अंदेशा है। इस सूरत में वह टैक्स बढ़ने से पहले अपना मुनाफा निकाल लेना चाहते हैं। दूसरी यह कि उन्हें कुछ सस्ती और अच्छी क्वालिटी वाली कंपनियां मिल गई हैं, जिनमें निवेश किया जा सकता है।

बफे को फॉलो करने वाले बफे को दूरदर्शी बताते हैं। लेकिन, खुद बफे ने ऐसा दावा कभी नहीं किया। उन्होंने तो मजाक में एक बार यहां तक कह दिया था कि कोई भी कंपनी जो अर्थशास्त्री को काम पर रखती है, उसमें एक कर्मचारी ज्यादा हो जाता है। बफे ने कभी भी आर्थिक पूर्वानुमान के आधार पर निवेश का कोई फैसला भी नहीं किया।

नकदी के पहाड़ का क्या करेंगे बफे

वॉरेन बफे के पास नकदी का नया पहाड़ बेशक बड़ा विशाल है। वह चाहे तो मौजूदा शेयर प्राइस पर मैकडॉनल्ड्स को खरीद लें। फिर भी उनके पास 80 अरब डॉलर बच जाएंगे। वह मेटा में भी कंपनी के मालिक मार्क जुकरबर्ग से बड़ी हिस्सेदारी ले सकते हैं। लेकिन, जाहिर तौर पर अभी बफे का निवेश का कोई इरादा नहीं, क्योंकि शेयर बाजार हर जगह महंगा है। फिर चाहे वह अमेरिका या फिर भारत।

अगर शेयर मार्केट में गिरावट आती है, तो बफे शानदार स्थिति में होंगे। उन्हें सस्ते में कई अच्छी कंपनियों के शेयर मिल सकते हैं, जिन्हें खरीदना उनका पुराना शौक रहा है। ऐसे में जाहिर है कि कैश भंडार बढ़ाने के पीछे की बड़ी वजह शेयर बाजार का महंगा होना है, किसी बड़े आर्थिक संकट की आहट नहीं। हालांकि, पैसों के इतने बड़े पहाड़ के साथ किसी भी शख्स को इंतजार सस्ते शेयरों का ही रहेगा।

बफे बेशक करिश्माई निवेशक हैं। इस बात से कोई इनकार तो कर ही नहीं सकता। लेकिन, अतीत और वर्तमान हमें यह बताती है कि बफे निवेश के बुनियादी सिद्धांतों के चलने वाले शानदार निवेशक हैं। अर्थव्यवस्था की करवट का सटीक अंदाजा लगाने वाले कोई नजूमी नहीं।

शेयर मार्केट में तूफानी रफ्तार से बढ़ रहे नए निवेशक, NSE ने सिर्फ 5 महीने में जोड़े एक करोड़ इन्वेस्टर

कोरोना महामारी के बाद शेयर मार्केट में निवेश करने वालों की तादाद काफी तेजी से बढ़ी है। शेयर मार्केट ने भी उन्हें निराश नहीं किया और हैरतंगेज रिटर्न दिया है। एनएसई ने पिछले पांच महीनों में ही 1 करोड़ यूनिक इन्वेस्टर जोड़े हैं। ये आंकड़े इसलिए भी हैरान करते हैं क्योंकि एनएसई पर रजिस्टर्ड इन्वेस्टर बेस का आंकड़ा 4 करोड़ तक पहुंचने में 25 साल लग गए थे।

नई दिल्ली। पिछले काफी समय से भारतीय शेयर मार्केट में शानदार तेजी देखने को मिल रही है। इस बहती गंगा में हाथ धोने के लिए बड़ी संख्या में नए निवेशक भी बाजार में आ रहे हैं। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर गुरुवार को रजिस्टर्ड यूनिक इन्वेस्टर्स की तादाद पहली बार 10 करोड़ के पार पहुंच गई।

टोटल अकाउंट 19 करोड़ के पार

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के मुताबिक, यूनिक रजिस्टर्ड इन्वेस्टर बेस का आंकड़ा 8 अगस्त को 10 करोड़ के पार पहुंच गया। एक्सचेंज के साथ रजिस्टर्ड क्लाइंट कोड का टोटल नंबर 19 करोड़ पहुंच गया। कई निवेशक एक से अधिक अकाउंट रखते हैं। इससे इन्वेस्टर्स का टोटल अकाउंट यूनिक नंबर से अधिक होता है। इसमें अब तक रजिस्टर किए गए सारे अकाउंट शामिल होते हैं।

सिर्फ 5 महीने में बढ़े 1 करोड़ निवेशक

कोरोना महामारी के बाद शेयर मार्केट में निवेश करने वालों की तादाद काफी तेजी से बढ़ी है। शेयर मार्केट ने भी उन्हें निराश नहीं किया और हैरतंगेज रिटर्न दिया है। एनएसई ने पिछले पांच महीनों में ही 1 करोड़ यूनिक इन्वेस्टर जोड़े हैं। ये आंकड़े इसलिए भी हैरान करते हैं, क्योंकि एनएसई पर रजिस्टर्ड इन्वेस्टर बेस का आंकड़ा 4 करोड़ तक पहुंचने में 25 साल लग गए थे।

3 साल में जुड़े 6 करोड़ नए इन्वेस्टर्स

एनएसई में 4 करोड़ यूनिक इन्वेस्टर्स मार्च 2021 में हुए थे। अब यह टोटल आंकड़ा 10 करोड़ के पार पहुंच गया है। इसका मतलब कि 25 साल में सिर्फ 4 करोड़ निवेशक जोड़ने वाले एनएसई ने पिछले करीब साढ़े तीन साल में 6 करोड़ नए इन्वेस्टर्स जोड़ लिए हैं। अब औसतन हर 6-7 महीने में 1 करोड़ नए निवेशक जुड़ते जा रहे हैं। यह रफ्तार आगे भी जारी रहने की उम्मीद है।

मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में 69 फीसदी बढ़ा FDI; मोबाइल के आयात पर निर्भरता घटी, निर्यात में बड़ा उछाल

परिवहन विशेष न्यूज

वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने बताया कि पिछले पांच वित्त वर्षों (2019-20 से 2023-24) के दौरान देश में कुल 383.50 अरब डॉलर का एफडीआई प्रवाह दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा की गई पहल से मोबाइल सहित कई क्षेत्रों में आयात पर निर्भरता घटी है। मोबाइल फोन का आयात 2014-15 में 48609 करोड़ रुपये से घटकर 2023-24 में 7674 करोड़ रुपये हो गया है।

नई दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने शुक्रवार को संसद में बताया कि 2014-24 के दौरान मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) 69 प्रतिशत बढ़कर 165.1 अरब डॉलर हो गया। राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में जितिन प्रसाद ने कहा कि भारत विनिर्माण क्षेत्र में विदेशी निवेश के लिए तेजी से एक पसंदीदा देश के रूप में उभर रहा है। इसके पिछले दस वित्तीय वर्षों (2004-14) में यह 97.7 अरब डॉलर था।

उन्होंने यह भी बताया कि पिछले पांच वित्त वर्षों (2019-20 से 2023-24) के दौरान देश में कुल 383.50 अरब डॉलर का एफडीआई प्रवाह दर्ज किया गया है। एक अन्य प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा की गई पहल से मोबाइल सहित कई क्षेत्रों में आयात पर निर्भरता घटी है। मोबाइल फोन का आयात 2014-15 में 48,609 करोड़ रुपये से घटकर 2023-24 में 7,674 करोड़ रुपये हो गया है। दूसरी ओर, निर्यात 2014-15 में 1,566 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023-24 में 1,28,982 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है।

मांग में गिरावट के चलते खिलौना निर्यात गिरा

सरकार ने शुक्रवार को संसद में बताया कि वैश्विक मांग में गिरावट के चलते भारत का खिलौना निर्यात 2021-22 में 17.7 करोड़ डालर से घटकर 2023-24 में 15.2 करोड़ डालर रह गया। राज्यसभा में वाणिज्य और उद्योग राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने कहा कि अमेरिका, ब्रिटेन और जर्मनी सहित भारत के प्रमुख निर्यात बाजारों में भी खिलौनों के आयात में 16-20 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है।

1100 रुपये उछला सोने का भाव, चांदी की चमक भी बढ़ी

स्थानीय जौहरियों की ओर से सोने की डिमांड बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने का भाव का मजबूत रहा। इससे कीमतों में तेजी आई है। वैश्विक स्तर पर बात करें कॉमेक्स सोना पिछले सत्र से 5.60 डॉलर प्रति औंस की बढ़त के साथ 2468.90 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा है। एक्सपर्ट आगे भी सोने के भाव में तेजी की संभावना जता रहे हैं।

नई दिल्ली। बजट में बेसिक कस्टम ड्यूटी घटाने के एलान के बाद से सोने और चांदी के भाव में ज्यादातर नरमी ही देखी जा रही थी। लेकिन, वैश्विक बाजार और घरेलू मांग में तेजी से संकेत लेते हुए शुक्रवार को राष्ट्रीय राजधानी में सोने की कीमत 1,100 रुपये बढ़कर 72,450 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। पिछले सत्र में यह 71,350 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था।

ऑल इंडिया सर्राफा एसोसिएशन के अनुसार, शुक्रवार को चांदी की कीमत भी 1,400 रुपये बढ़कर 82,500 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई, जबकि पिछले कारोबार में यह 81,100 रुपये प्रति किलोग्राम थी। इस बीच 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना 1,100 रुपये उछलकर 72,100 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। पिछले कारोबार में यह 71,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था।

क्यों बढ़े सोने के भाव

व्यापारियों का कहना है कि स्थानीय जौहरियों की ओर से सोने की डिमांड बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने का भाव का मजबूत रहा। इससे कीमतों में तेजी आई है। वैश्विक स्तर पर बात करें, कॉमेक्स सोना पिछले सत्र से 5.60 डॉलर प्रति औंस की बढ़त के साथ 2,468.90 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा है। विशेषज्ञों ने कहा कि सोने की कीमत में वृद्धि मजबूत अमेरिकी डॉलर और ट्रेजरी यील्ड में वृद्धि के बावजूद हुई, जो व्यापक बाजार रैली से प्रेरित थी।

क्या है एक्सपर्ट की राय

कोटक सिक्योरिटीज के एवीपी-कमोडिटी रिसर्च कायनात चैनवाला ने कहा, ₹चीन के केंद्रीय बैंक द्वारा लगातार तीसरे महीने सोने की खरीद से परहेज करने के बावजूद भी धातु में तेजी आई।₹ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कॉमेक्स चांदी मामूली रूप से गिरकर 27.60 डॉलर प्रति औंस पर आ गई।

एलकेपी सिक्योरिटीज के वीपी रिसर्च एनालिस्ट - कमोडिटी और करेंसी, जतिन त्रिवेदी ने कहा, ₹सोने के व्यापारी अगले सप्ताह आने वाले सीपीआई डेटा पर बारीकी नजर रखेंगे। इसी से भविष्य में ब्याज दरों में कटौती की दिशा की पुष्टि होगी।₹

एंजेल वन लिमिटेड में नॉन-एग्री कमोडिटीज और करेंसी के के डीवीपी (शोध) प्रथमेश माल्या का कहना है कि सुरक्षित निवेश की मांग और मौजूदा भू-राजनीतिक तनावों के बीच अमेरिकी फेडरल रिजर्व की नीतिगत दर में कटौती की उम्मीदों के कारण सोने में तेजी बनी रहने की संभावना है।

इंडस्ट्री में AI की भूमिका को समझ रहे हैं लीडर्स, समिट में हिस्सा लेकर आप भी इसे जानें

नई दिल्ली। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग धीरे-धीरे हमारे जीवन का हिस्सा बनते जा रहे हैं। कई कंपनियां अपने ग्राहकों को बेहतर सुविधाएं देने और अपनी कार्यकुशलता को बढ़ावा देने के लिए इसका भरपूर इस्तेमाल कर रही हैं। बता दें कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नवाचार को बढ़ावा देता है, सटीक निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करता है, ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाता है, कार्यकुशलता को बढ़ाता है, और इंडस्ट्री ट्रेंड को पहचानने में सहायता करता है।

इंडस्ट्री में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के महत्व को समझते हुए लीडर्स अपने काम में इसकी मदद ले रहे हैं। ऐसे में क्या आप भी इंडस्ट्री में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग की भूमिका को अच्छे से समझना चाहते हैं? तो Digital Bharat Summit 2024 आपके लिए है। इसकी थीम है, - AI IGNITE LEADERSHIP SUMMIT 2024 (टेक्नोलॉजी फॉर ग्रोथ)। इस महत्वपूर्ण समारोह का आयोजन 9 अगस्त यानी आज 3 बजे से होटल प्राइड प्लाजा, एयरोसिटी, नई दिल्ली में किया जाएगा।

Digital Bharat Summit 2024 में कई क्षेत्रों के विशेषज्ञ और स्पीकर्स मौजूद होंगे, जिनकी टेक्नोलॉजी और डिजिटल इंडिया पर मजबूत पकड़ होगी। ये विशेषज्ञ भारत में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को अधिक मजबूत बनाने के लिए अपने सुझाव देंगे। इसके अलावा, डिजिटल पहल किस तरह से आर्थिक विकास और जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकती है, इसकी भी चर्चा होगी।

समारोह में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास से विभिन्न इंडस्ट्रीज की संभावनाओं पर चर्चा की जाएगी, जिसके चलते हेल्थकेयर, फाइनेंस, रिटेल, एजुकेशन आदि में बदलाव देखने को मिला है। Digital Bharat Summit 2024 में जिन महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होगी।

बाहरी झटकों के बावजूद भारत निजी इक्विटी निवेश के लिए शीर्ष विकल्प बना रहेगा : जेफरीज

वैश्विक ब्रोकरेज फर्म जेफरीज (Jefferies) ने कहा कि भारत निजी इक्विटी (PI) निवेश अभी भी काफी अच्छा ऑप्शन है। हालांकि निजी इक्विटी उद्योग के सामने अभी चुनौतियां है। निवेश को लेकर जेफरीज ने रिपोर्ट जारी किया है। रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय शेयर बाजार का मूल्यांकन लगभग 5.2 ट्रिलियन डॉलर हो गया है। इसके अलावा शेयर बाजार का पूंजीकरण अब जीडीपी का 145 प्रतिशत है।

नई दिल्ली। वैश्विक ब्रोकरेज फर्म जेफरीज (Jefferies) के मुताबिक बाहरी झटकों के बावजूद भारत निजी इक्विटी (PI) निवेश के लिए एक शीर्ष विकल्प बना रहेगा। जेफरीज द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि निजी इक्विटी उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों के बावजूद (नकदी की कमी और प्रमुख कंपनियों द्वारा किए जाने वाले निवेश में गिरावट) भारत पूंजी जुटाने और निवेश के अवसरों के लिए पूरी तरह अनुकूल है।

अपनी पिछली रिपोर्ट में भी जेफरीज ने उल्लेख किया था कि भारत के शेयर बाजार ने उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है, खासकर आम चुनावों के नतीजों के बाद। रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में भारतीय शेयर बाजार का मूल्यांकन लगभग 5.2 ट्रिलियन डॉलर है और यह मार्च, 2020 के 1.3 ट्रिलियन डॉलर से 296 प्रतिशत ज्यादा है।

मूल्यांकन में यह वृद्धि मजबूत घरेलू मांग द्वारा बाजार संचालन की तस्दीक करता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि शेयर बाजार का पूंजीकरण अब जीडीपी का 145 प्रतिशत है जो मार्च 2020 के मुकाबले 52 प्रतिशत अधिक है। कंपनियों के शेयरों के मूल्य पहले के मुकाबले ज्यादा हैं, लेकिन अल्पकालिक व्यवधान और सामरिक चिंताओं के अलावा इन्हें बेचने की कोई वजह नहीं आती है।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारतीय बाजार में होने वाला परिवर्तन व्यवस्थित निवेश योजनाओं (एसआईपी) और राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के माध्यम से खुदरा निवेशकों की बढ़ती भागीदारी से भी स्पष्ट है। यह भारत में इक्विटी निवेश के लिए एक आशाजनक भविष्य का संकेत देता है।

विपक्ष के तीखे तेवर तो सरकार ने पूरे किए एजेंडे, लंबे समय बाद बिना स्थगन और बाधा के समाप्त हुआ संसद का सत्र

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार ने संसद का मानसून सत्र एक दिन पहले समाप्त करने का फैसला किया है। इसी के साथ सरकार ने कहा कि सत्र काफी सकारात्मक रहा और कामकाज के सभी एजेंडे पूरे कर लिए गए। सफल संचालन के लिए सरकार ने विपक्षी दलों का भी आभार जताया और कहा कि आगे के सत्र भी ऐसे रहने की उम्मीद।

नई दिल्ली। 18वीं लोकसभा का पहला बजट सत्र भले ही तय समय से एक दिन पहले अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो गया, मगर विधायी कामकाज की दृष्टि से संसद का यह सत्र शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने में सफल रहा।

सरकार ने बजट और वित्त विधेयक पारित कराने से लेकर अपने घोषित सभी विधायी एजेंडे को सिरे चढ़ाया तो विपक्ष ने भी सत्र में अपने मुद्दों के जरिए सरकार की घेरेबंदी की कोशिश की। इस क्रम में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच कुछ मौकों पर तीखी नोक-झोंक हुई, मगर लंबे अर्से बाद यह पहला सत्र रहा जब संसद की कार्यवाही एक दिन भी हंगामे की वजह से बाधित नहीं हुई।

एक दिन पहले सत्र समाप्त करने का निर्णय

इस दौरान लोकसभा में वित्त विधेयक समेत चार विधेयक पारित हुए, जबकि 12 नए विधेयक पेश हुए, जिसमें राजनीतिक रूप से संवेनदशील वक्फ संशोधन विधेयक भी शामिल है। इस पर संयुक्त संसदीय समिति गठित की गई है। संसद का बजट सत्र 12 अगस्त तक निर्धारित था, मगर सरकार ने कामकाज का एजेंडा पूरा कर लेने के बाद एक दिन पहले ही सत्र समाप्त करने का फैसला किया।

विपक्ष ने इसको लेकर सरकार पर तंज भी कसा कि संसद का सामना करने से बचने के लिए सरकार ने एक दिन पहले सत्र खत्म किया है। वैसे सत्र के दौरान विपक्ष ने नीट पेपर लीक से जुड़े मुद्दे प्रश्नकाल में उठाने से लेकर किसानों से लेकर आम आदमी से जुड़े मसले उठाने में आक्रामकता दिखाई, मगर सत्र को बाधित करने की बजाय विपक्षी दलों ने भी बहस-चर्चा के दौरान अपने मुद्दों को मुखरता से उठाने की रणनीति अपनाई।

कई अहम मुद्दों पर हुई चर्चा

लोकसभा में पारित चार विधेयकों में तो वित्त, विनियोग और जम्मू-कश्मीर का विनियोग विधेयक तो संवैधानिक अनिवार्यता से जुड़े हैं, जिसे राज्यसभा ने भी पारित किया, जबकि लोकसभा में पारित भारतीय वायुयान विधेयक हवाई यात्रा क्षेत्र के संचालन में सुधार से जुड़ा है। सत्र के दौरान बांग्लादेश में तख्तापलट की घटना को लेकर विदेशमंत्री की ओर से बयान दिया गया तो वायनाड में भूस्खलन से हुई तबाही के मसले पर भी संक्षिप्त चर्चा हुई।

22 अगस्त से शुरू हुए सत्र में एक दिन भी ऐसा नहीं हुआ जब शोर-शराबे के कारण सदन की कार्यवाही पूरे दिन के लिए ठप हुई हो। संसदीय कार्यमंत्री किरन रिजिजू ने भी सत्र समापन के बाद अपनी पारंपरिक प्रेस वार्ता में इसे सुखद बताते हुए कहा कि काफी अर्से बाद पूरे सत्र में एक दिन भी हंगामे की वजह से बर्बाद नहीं हुआ।

संसदीय कार्य मंत्री ने जताया विपक्ष का आभार

इसके लिए लोकसभा स्पीकर और राज्यसभा के सभापति के साथ ही रिजिजू ने विपक्ष दलों के सांसदों का भी धन्यवाद जताते हुए कहा कि कुछ नोंक-झोंक तथा शोरगुल जरूर हुआ, मगर लोकतंत्र में ऐसा होना स्वाभाविक है। उन्होंने कहा कि हम एक सुदृढ़ लोकतंत्र हैं, जिसमें शोर-गुल कई बार एक अनिवार्य हिस्सा होता है, मगर इस बार शोरगुल के बावजूद एक दिन भी बाधित नहीं हुआ।

संसदीय कार्यमंत्री ने उम्मीद जताई कि आगामी शीत सत्र के दौरान भी इसी भावना से पक्ष और विपक्ष काम करेंगे। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भी सत्र के कामकाज पर संतोष जताते हुए कहा कि 18वीं लोकसभा के दूसरे सत्र के दौरान कार्य-उत्पादकता 136 प्रतिशत रही। इस दौरान 15 बैठकों में 115 घंटे की चर्चा हुई जिसमें आम बजट पर आम 27 घंटे से ज्यादा चर्चा हुई और 181 सदस्यों ने भाग लिया।

एससी-एसटी में क्रीमी लेयर के खिलाफ भाजपा में भी उठी मांग, सांसदों ने लगाई पीएम मोदी से गुहार

भाजपा में भी एससी-एसटी कोटे में क्रीमी लेयर चिह्नित करने के खिलाफ मांग उठ रही है। भाजपा के एससी-एसटी वर्ग के सांसदों के प्रतिनिधिमंडल ने पीएम मोदी से मुलाकात कर मांग रखी कि इसे लागू न किया जाए। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने अनुसूचित जाति और जनजाति में क्रीमी लेयर बनाने को लेकर मत दिया था और राज्यों को निर्देश दिए थे।

नई दिल्ली। आरक्षण में कोटे में कोटे की व्यवस्था पर सुनवाई करते हुए पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने अनुसूचित जाति और जनजाति में क्रीमी लेयर बनाने को लेकर जो मत दिया था, उस पर राजनीतिक दल अब अपना रुख स्पष्ट कर रहे हैं। भाजपा ने साफ कर दिया है कि वह इसके पक्ष में नहीं है। शुक्रवार को भाजपा के एससी-एसटी वर्ग के सांसदों का प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिला और आग्रह किया कि इसे लागू न किया जाए। इस भेंट-वार्ता की सूचना को इंटरनेट मीडिया पर साझा करते हुए पीएम मोदी ने भी एससी-एसटी वर्ग के सशक्तीकरण व कल्याण के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताते हुए इशारा कर दिया है कि वह भी क्रीमी लेयर बनाने के पक्ष में नहीं हैं।

SC ने राज्यों को दिया था निर्देश

सुप्रीम कोर्ट की सात सदस्यीय संविधान पीठ ने पिछले दिनों आरक्षण में कोटे में कोटे पर विस्तृत निर्णय सुनाते हुए यह मत भी रखा था कि राज्य सरकारें एससी-एसटी के आरक्षण में क्रीमी लेयर को अलग करें, ताकि आरक्षण के लाभ से वंचित रह गए कमजोर तबके को इसका पूरा लाभ मिल सके। चूंकि, कोर्ट के इस सुझाव के पालन को राजनीतिक प्रभाव भी तय है, इसलिए धीरे-धीरे राजनीतिक दलों ने इस पर अपना रुख साफ करना शुरू कर दिया है।

क्षेत्रीय दल जता चुके हैं असहमति : कई क्षेत्रीय दल पहले ही इस मत से असहमति जता चुके हैं और शुक्रवार को भाजपा के एससी-एसटी वर्ग के सांसदों का प्रतिनिधिमंडल संसद भवन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिला।

बावन अवतार ने राजा बली से मांगी थी साढ़े तीन गज जमीन, घमंड गुरुर किया था चूर चूर :- पण्डित विष्णु महाराज

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। शहर में प्रवेश की पहली कॉलोनी रमा विहार की पावन धरा पर बह रही श्रीमद्भ भागवत सप्ताह ज्ञान गंगा में आज पाँचवे दिन की कथा के दौरान भगवान श्रीकृष्ण को छप्पन भोग लगाया गया। जिसकी कथा समाप्ति के साथ ही झांकी बनकर कथा में पधारे भगवान श्रीकृष्ण के साथ महाआरती कर छप्पन भोग का प्रसाद उपस्थित भक्तजनों में वितरण किया गया। इससे पूर्व भागवताचार्य पण्डित विष्णु महाराज के मुखारविंद से कथा की रसधार में अपनी सुमधुरवाणी से भगवान श्रीकृष्ण जन्म, उनका बाल्यकाल व अन्य कृष्ण लीलाओं का सुन्दर वर्णन करते हुए श्रोतागणों को मंत्रमुग्ध और भाव विभोर कर दिया।

पाँचवें दिन की कथा में पण्डित विष्णु महाराज ने श्रद्धालुओं से कहाँ की श्रीमद् भागवतजी का ज्ञान और भक्ति के अद्भभुद संगम कराने को लेकर राजाबली ने अपने 99 यज्ञ पूरे किए थे और 100वें यज्ञ की तैयारी करते वक्त राजाबली के दर पर भगवान विष्णु बावन अवतार में प्रकट होकर आ जाते हैं और राजाबली के 100वें यज्ञ पूर्ण करने से पूर्व शशर्त राजाबली से वचन लेते हुए साढ़े तीन गज जमीन मांगते हैं। ऐसे में राजाबली हंसता हुआ वचन दे देता हैं। जिस पर भगवान विष्णु जो कि बावन अवतार रूप में आये थे वो तीन गज में धरती, आसमान व पाताल लोक नाप लेते हैं। ऐसे में फिर आधा गज जमीन राजाबली के पास शेष नही बचने पर भगवान विष्णु उसका गुरुर, घमंड चूर चूर करते हुए उसके द्वारा करवाये जा रहे 100वें यज्ञ को पूरा नही होने देते हैं। और हमेसा नेकी व धर्म की राह पर चलने की नसीहत देते हैं।

इस कथा के दौरान हर प्रसंग को झांकियों के माध्यम से दिखाया जा रहा हैं। जो कि रमा विहार, सुखाड़िया नगर, सुभाष नगर व शहर से आगन्तुक श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध करते हुए उनके मन को मौह रहा हैं।

रामकन्या त्रिपाठी ने बताया कि पाँचवें दिन कथा की शुरुआत से पूर्व स्थापित सभी देवी देवताओं और मंडलों की लखन मित्तल व उमा मित्तल द्वारा पूजा करवाई गई। वही कान्ता शर्मा एवं रमा विहार व सुखाड़िया नगर की महिलाओं द्वारा गोवर्धन नाथ की पूजा भी की गई। तो जयप्रकाश नागला द्वारा सभी पंडितो को महाप्रसाद भी जिमाया गया। जबकि राधा वल्लभ महिला मित्र मण्डली की रंजना शर्मा, रेखा, गीता जाट, शशि शर्मा, बंटी जौशी, चंदा वैष्णव, बाल कंवर राठौड़, मंजू राठौड़ सहित सभी महिलाओं ने कथा कि व्यवस्थाओं को अंजाम दिया।

-आज होगा श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह।

सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भ भागवत कथा के छठवें दिन आज शुक्रवार को भगवान श्रीकृष्ण का रुक्मणी संघ विवाह होगा और उनकी रास लीलाओं के बखान के साथ ही सुन्दर चित्रण के साथ झांकियां भी सजाई जाएगी ।

वायनाड में अब जमीन के नीचे से आ रही रहस्यमयी आवाज, दहशत में हैं लोग; भूस्खलन से मच चुकी तबाही

30 जुलाई की रात को दो भूस्खलन से केरल के वायनाड में भीषण तबाही मची थी। इस आपदा में सैकड़ों लोगों की जान जा चुकी है। वहीं बड़ी संख्या में लोग अब भी लापता हैं। अब यहां जमीन के अंदर से आने वाली रहस्यमयी आवाजों ने लोगों की धड़कनों को बढ़ा दिया है। हालांकि केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने भूकंप की संभावना को खारिज कर दिया है।

वायनाड। केरल के भूस्खलन प्रभावित वायनाड जिले में विभिन्न स्थानों पर शुक्रवार सुबह जमीन के नीचे से रहस्यमय आवाज सुनाई दी। अधिकारियों ने बताया कि अंबालावायल गांव और व्यथिरी तालुक के कुछ इलाकों में तेज आवाज सुनाई दी। पंचायत वार्ड के एक सदस्य ने कहा कि यह आवाज सुबह करीब 10:15 बजे सुनी गई।

लोगों में फैली दहशत: जमीन के नीचे से रहस्यमयी आवाज से स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई। कोझिकोड जिले के कुडुएरिंजी में भी ऐसी ही घटनाएं सामने आईं। आईएएनएस के अनुसार नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी ने घटना की जांच के बाद कहा यह भूकंप नहीं था। चिंता की बात नहीं है। केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने भूकंप की संभावना को खारिज कर दिया।

शनिवार को वायनाड जाएंगे पीएम : जिलाधिकारी डीआर. मेघश्री ने कहा कि जिला प्रशासन ने प्रभावित क्षेत्रों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए कदम उठाए हैं। वायनाड में 30 जुलाई को हुए भीषण भूस्खलन में 226 लोगों की मौत हो गई और कई लोग लापता हो गए थे। इस बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार को भूस्खलन प्रभावित वायनाड का दौरा करेंगे। वह राहत और पुनर्वास प्रयासों की समीक्षा करेंगे।

हवाई सर्वेक्षण करेंगे पीएम : अधिकारियों ने बताया कि पीएम मोदी दिन में करीब 11 बजे कन्नूर पहुंचेंगे। फिर वायनाड में भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र का हवाई सर्वेक्षण करेंगे। वह राहत शिविर और अस्पताल जाकर भूस्खलन पीड़िता से मिलेंगे। पीएम मोदी समीक्षा बैठक की अध्यक्षता भी करेंगे।

लापता 152 लोगों की तलाश जारी : आईएएनएस के अनुसार भूस्खलन के बाद लापता 152 लोगों की तलाश जारी है। इस बीच केरल हाई कोर्ट ने मीडिया रिपोर्टों और उसे प्राप्त पत्र के आधार पर स्वतः संज्ञान लेते हुए मामला दर्ज करने का फैसला किया है। इसमें कहा गया कि वायनाड और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील अन्य क्षेत्रों में बेलगाम दोहन किया गया है।

किशोरी ने तीन घंटे तक किया भरतनाट्यम : तमिलनाडु की किशोरी हरिणी श्री ने वायनाड में भूस्खलन के पीड़ितों के लिए धन जुटाने के लिए लगातार तीन घंटे तक भरतनाट्यम नृत्य किया। केरल जनसंपर्क विभाग ने एक्स पर पोस्ट किया कि तमिलनाडु की किशोरी हरिणी श्री ने इस प्रदर्शन से एकत्रित फंड और अपनी बचत से वायनाड भूस्खलन पीड़ितों के लिए केरल मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष में 15 हजार रुपये का दान दिया।

श्रीमद् भागवत कथा एक ऐसा कल्पवृक्ष हैं जिसमें हमारी जैसी श्रद्धा रहेगी वैसा ही हमें फल प्राप्त होगा : भागवताचार्य विष्णु महाराज

आज तीसरे पहर बाद होगी सात दिवशीय श्रीमद्भ भागवत कथा की पूर्णाहुति।

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। भीलवाड़ा माण्डल मार्ग पर सुखाड़िया सर्कल के पास बसी रमा विहार कॉलोनी में 4 अगस्त रविवार से शुरू हुई संगीतमय श्रीमद्भ भागवत की आज 10 अगस्त शनिवार को तीसरे पहर बाद पूर्णाहुति की जाएगी।

रमा विहार में चल रही श्रीमद्भ भागवत कथा के छठवें दिन शुक्रवार को भागवताचार्य पण्डित विष्णु महाराज ने कथा श्रवण करने पधारे श्रद्धालुओं के सन्मुख अपने मुखारविंद से उच्चारित शब्दों के जरिये कहां की ऐसा रस जो जीवात्मा को परमात्मा से जौड़े वही रास हैं। साथ ही कहा की बाल्य अवस्था में मन स्वच्छ एवं निर्मल होता हैं जबकि वृद्धावस्था में इंद्रियां शिथिल होती हैं। हास तो युवावस्था का होता हैं। ऐसे में जिसने युवावस्था ईश्वर के नाम कर दी वह हास नहीं रास हैं। भगवान श्रीकृष्ण का गोपियों के साथ रास का वर्णन करते हुए कहां की शरद पूर्णिमा को भगवान श्रीकृष्ण ने रास के लिए चुना।

भागवताचार्य विष्णु महाराज ने कथा के दौरान बताया की भगवान ने महारास क्यो किया था इस शीर्षक पर विस्तार से वर्णन करते हुए अपने मुखारविंद से कहां की महारास एक बहुत बड़ी रास हैं। इससे पहले भगवान ने छौटी रास को सम्पन्न किया होगा। तब से इसे महारास कहा गया हैं। जैसे भगवान श्रीराम ने चित्रकूट धाम में निन्यानवे रास सम्पन्न किये थे जब उन्होंने सौवी रास को सम्पन्न करने के लिए माता जानकी का श्रृंगार करना शुरू किया तो जयंत ने इस मनोरम द्रश्य को देखा जिससे मन में भ्रम पैदा हुआ और इसी भ्रम पैदा होने के चलते ही जयंत ने माता जानकी के श्रीचरणों में चौच मारी जिससे भगवान ने उस रास को वही रोक दिया था । तब भगवान ने सभी को आशिर्वाद देते हुए द्वापर यूग तक इंतजार करने की बात कही । उसी रास को भगवान श्री कृष्ण ने यहाँ महारास का रूप दिया हैं। ये महारास शरद पूर्णिमा से प्रारम्भ हुई जो लगातार छः महीनों तक जारी रही थी। साथ ही कहां की शरद पूर्णिमा मेल छोड़ने की रात्रि होती हैं। सावन और भादो में नदी तालाब का पानी भी मेला नजर आता हैं परंतु शरद पूर्णिमा के बाद जल अपना मेल छोड़ देता हैं तब पानी बिलकुल स्वच्छ और निर्मल हो जाता हैं। अवगुण नष्ट करने के लिए भगवान ने शरद पूर्णिमा को चुना हैं। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण का मथुरा गमन हुआ और कंस वध किया। मथुरा में सत्ता परिवर्तन के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने उज्जैन में संदीपन ऋषि के आश्रम में 64 दिन रहकर विद्या अध्ययन किया। वही यहां उनको सुदामा नाम का नया मित्र भी मिला। संदीपन ऋषि को गुरुदक्षिणा देने के लिए समुद्र से गुरु पुत्र की मांग की। वहां शंखासुर नामक राक्षस को मारकर गुरुपुत्र गुरुजी को सौप कर भगवान श्रीकृष्ण पुनः मथुरा में आ गए। अपनी रास कथा को सम्पन्न कर भगवान ने मथुरा पहुँच कंस का वध किया वही मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण को नए मित्र मिले जो बृहस्पति के शिष्य उद्धव जी महाराज थे जो आत्मज्ञान और ब्रह्म ज्ञान के अच्छे विद्वान भी थे। जब भगवान श्रीकृष्ण को यह ज्ञान देने लगे तब भगवान ने इनको ब्रज में गोपियों को ज्ञान देने के लिए भेजा पर गोपियों के भक्ति ज्ञान के सामने उद्धव जी का ब्रह्म ज्ञान भी बूंद मात्र रह गया। तत्पश्चात जरासंध कालयवन के युद्ध का वर्णन हुआ। और भगवान श्रीकृष्ण ने द्वारिका नगरी में अपना निवास किया क्यों कि उस समय भारत की रक्षा उत्तर में हिमालय करता था तो दक्षिण और पूर्व में समुद्र करता था। जबकि भारत के अंदर आक्रमण पश्चिम से होते थे। तब भगवान ने भारत के पश्चिम द्वार पर दुर्ग बनाया जो द्वारिका के नाम से विख्यात हुआ। तत्पश्चात शिशुपाल का मान भंग करते हुए रूकमणी का हरण कर उनके साथ में श्रीकृष्ण जी का पहला विवाहोत्सव बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। और द्वारिका को नई पटरानी मिली तो उधर भगवान शंकर के तीसरे नेत्र से कामदेव जी भष्म हो गए थे। तब भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मणी ने उनको प्रद्युमन जी के रूप में प्रकट किया। जबकि इससे पूर्व श्रीकृष्ण जन्म पर नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की धूम मची रही तो सभी श्रद्धालुजनों ने भजनों पर नाचने झूमने का भरपूर आनंद लिया और बड़े ही हर्षोल्लास के साथ श्रीकृष्ण भगवान के जन्म का महोत्सव मनाया। बाद इसके राधा रुक्मिणी विवाह का भी सचित्र वर्णन करते हुए बड़े ही हर्षोउल्लासित माहौल में विवाहोत्सव मनाया गया।

रामकन्या त्रिपाठी ने बताया कि छठवें दिन भगवान श्री कृष्ण संग रुक्मिणी विवाह में बाल गायिका रिदम तिवारी ने एक से बढ़कर एक नायाब भजनों की प्रस्तुतियां देकर श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह में गाये भजनों की रसधार में श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया जिससे श्रद्धालुजंन भावविभोर होकर अपनेआप को नाचने झूमने से नहीं रोक सकें और भक्तिभाव से सराबोर होकर पांडाल में थिरकने लगे।

त्रिपाठी ने बताया कि छठवें दिन की कथा शुरू होने से पूर्व शिव कुमार टाँक व चंचल टाँक ने स्थापित सभी देवी देवताओं और मण्डलों की पूजा अर्चना करवाई तो राहुल देव सिंह व चन्द्रप्रभा ने पंडितों को महाप्रसाद जिमाया। वही वार्ड नम्बर 65 से पार्षदा कांता शर्मा ने व्यासपीठ की पूजा भी करवाई। जबकि राधा वल्लभ महिला मित्र मण्डली की उमा मित्तल, बंटी जौशी, पार्वती, उर्मिला लड्ढा, मधु जौशी, मंजू पारीक, रामु, अनिता ईनानी, सुमित्रा, संजना गुर्जर, कुसुम ने मिलकर आज की कथा की व्यवस्थाओं को अंजाम दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023